दूसरा अध्याय

उदय प्रकाश की रचनाओं में नवऔपनिवेशिक स्थितियाँ और प्रतिरोध

दूसरा अध्याय
उदय प्रकाश की रचनाओं में
नवऔपनिवेशिक स्थितियाँ और प्रतिरोध

भारत उपनिवेश से मुक्त है। लेकिन इसकी दीर्घकालीन इतिहास की परिणतियों से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं। इसी मुक्ति के आर्तनाद के बीच साम्राज्यवादी शक्तियाँ एक अगला मुखौटा पहन कर आयी। वह है नवउपनिवेशवाद। हम उसमें जाने अनजाने फंस गये। चाहे वह बाज़ार हो, विश्व बैंक हो, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोश एवं विश्व व्यापार संगठन हो। इन तमाम संस्थायें अपना लक्ष्य भूलकर अमेरिकी साम्राज्यवाद को पनपने का अवसर दे रही हैं। फलस्वरूप नवउपनिवेशी साम्राज्यवाद पुष्ट हो रहा है। उसके खिलाफ आवाज़ उठाना समकालीन साहित्य अपना फर्ज़ समझता है। नवउपनिवेशवाद की खतरनाक स्थितियों पर पहले अध्याय में विस्तार से चर्चा की है। इस अध्याय में नवउपनिवेशवाद की छाया में जो संस्कृति पनप रही है उसका पर्दाफाश एवं उसके प्रति आलोच्य रचनाकार की प्रतिरोधी चेतना का विश्लेषण है।

समकालीन रचनाकार उदय प्रकाश की रचनाओं में साम्राज्यवादी साजिशों के प्रति प्रतिरोध हम देख सकते हैं। उनकी प्रतिरोधी भाषा पर यहाँ विचार किया जा रहा है।

2.1 साम्राज्यवादी साजिश का प्रतिरोध

हिन्दुस्तान एवं अन्य देशों ने बडे बडे साम्राज्य और साम्राट को देखा है। इन सम्राटों ने दूसरे देश जीते उन्हें लूटा-खसोटा और अपने उपनिवेश बनाये। इसलिए सम्राटों को भी साम्राज्यवादी कहा जाता है। स्पेन-अमेरिका युद्ध एवं अंग्रेज़ बोअर युद्ध के बाद से अर्थ नीति, राजनीति एवं साहित्य में साम्राज्यवादी शब्दों का प्रयोग नये अर्थ में प्रयुक्त हुआ। आज के साम्राज्यवाद को पूँजीवादी और पहले के साम्राज्यवाद को सामंती साम्राज्यवाद कहा जाता है। हमें यह देखना चाहिए कि पूँजीवाद विकास करके-करके जब अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है तब साम्राज्यवाद बन जाता है। साम्राज्यवाद कृषि प्रदेशों के साथ-साथ अत्यन्त औद्योगिक प्रदेशों को हडप लेने की चेष्टा करता है।

अमेरिका आज साम्राज्यवादी शक्ति का प्रतीक होकर खडा है। वह अविकसित एवं विकासोन्मुख देशों पर अपना अधिकार जमा रहा है और जो राष्ट्र अपनी ताकत को मानते नहीं उनपर बहुत बडा अत्याचार करता है। उदाहरण के तौर पर इराक के प्रति अफगानिस्तान के प्रति तथा उत्तर कोरिया के प्रति उनका रवैया विचारणीय है। फिर भी वह अपने को बदलने के लिए तैयार नहीं है। भारत लगभग पूर्णतः साम्राज्यवादी नीतियों का हिमायती है।

उदय प्रकाश की रचनाएँ हमारे समाज की त्रासदी को व्यक्त करती हैं। रमाकान्त श्रीवास्तव उदय प्रकाश की रचनाओं को नवउपनिवेश के प्रतिरोध के रूप में मानकर यों कहते हैं - "शताब्दी के इस अंतिम पडाव पर अंधाधुंध होता

हुआ निजीकरण, भूमंडलीकरण की दुहाई देते हुए अपनी अलग पहचान की आसक्ति को पिछडापन घोषित करने की व्यावसायिक नियत संस्कृति को गैर ज़रूरी और बाज़ार को जीवन का आधार बना देने की सुनियोजित कोशिश आज के भारतीय लेखन के सर्वाधिक चिंतनीय सरोकार हैं, किन्तु उदय प्रकाश की रचनाओं में तो यही प्रमुख कथ्य होता रहा है।"[1] अर्थात् अपनी रचनाओं के ज़रिये उन्होंने उपनिवेशिक इतिहास और नवउपनिवेशवादी प्रवृत्तियों की अमानवीय बातों पर प्रहार किया है।

समकालीन कविता में साम्राज्यवाद का खुलासा एवं प्रतिरोध हम देख सकते हैं। उदय प्रकाश की 'बहेलिया' नामक कविता में साम्राज्यवादी प्रतिरोध है। यहाँ किसानों की आत्महत्या बार-बार हो रही हैं। यह तो साम्राज्यवाद के अदृश्य आक्रमण में होनेवाली हत्यायें ही है। साम्राज्यवादी शक्तियों का खुलासा यों है-

"बहेलिया हैं वे बहेलिया
x x x x
वे आये हैं इधर
हमारे मोहल्ले में कविता में कला में
तम्बू गाड दिया है उन्होंने अपना
वे आये है
फूलों के कमान
चिडियों की भाषा

---

1. अनभैन साँच - 2014 - पृ. 37

बच्चों की हस्सी
पौधों की हरियाली के साथ
विनम्र, मुलायम, धुले
साफ सफेद।"[1]

'बहेलिया' साम्राज्यवाद का प्रतीक है। बहेलिया रूपी साम्राज्यवादी शक्तियों ने पहले यहाँ चिडियों की भाषा, बच्चों की हँसी एवं हरियाली या मुलायम साफ-सुधरे चेहरे को बदल दिया और फिर उन्होंने अपनी कविता, मुहल्ले एवं कला में हस्ताक्षेप किया। याने कि हमारी संस्कृति को उन्होंने तहस-नहस कर दिया।

उदय प्रकाश की चर्चित कहानी 'वॉरन हेस्टिग्स का सांड' में 'वॉरेन हेस्टिग्स' साम्राज्यवाद का प्रतिनिधि है। वह हिन्दुस्तान और यहाँ की संस्कृति से अभिभूत है। साथ ही साथ इस संस्कृति को आतंकित करने की इच्छा भी है। जैसे आलीस इन वंडरलैंट (Alice In WonderLand) में सब कुछ अजूबा है, उसी तरह वॉरेन हेस्टिग्स के लिए, भारत रहस्य एवं रोमांच भरी दुनिया है। उसके सामने कुम्हारिन मालिनी, नटनी जैसी औरतें आश्चर्य जनक ढंग से रहस्यपूर्ण है। वॉरेन हेस्टिग्स को लगता है यहाँ की स्त्रियाँ भविष्य को अच्छी तरह जानती हैं। 'चोखी' वॉरेन हेस्टिग्स की प्रेमिका है। फिर भी वह उससे कहती है - "बुतू को, अब्दुल कादिर को, मेरे को, सबको पता है कि तुम फिरंग लोग उस कागज पर घोडा दौडाएगा, उसको बंदूक से मारेगा, उसको पिंजरे में डालेगा, उसको चूस चूस कर

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - बहेलिया - पृ. 53

खाएगा और जब तुम लोग यहाँ से जाएगा तो वे नक्शा किसी अपने गुलाम को सौंप जाएगा।"[1] यह सुनकर वॉरेन हेस्टिंग्स भयभीत हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि चोखी शेर पर बैठी वह दूसरी औरत थी, जिसके हाथ में किसी डरावने पुरुष का कटा हुआ सिर होता है। वास्तव में 'काली' का अवतार है। चोखी कहती है - "...तू यहाँ का नहीं हैं रे। तू फिरंग है, फिरंग।"[2] भारतीय स्त्री पहले से ही प्रतिरोध करनेवाली थी। वे जानती हैं कि अंग्रेज अपने नसल में लौटा है, वैसे ही अपने वतन को भी लौटेगा। चोखी वॉरेन हेस्टिंग्स से गर्भवती बन जाती है। लेकिन चोखी इस बीज को मिटाती है - और कहती हैं - "देख इस खंजर से कौन मर रहा है? मर रहा है तेरा बीज, जो मेरे पेट में है।"[3] उदय जी इस घटना से यह बनाना चाहते हैं कि यहाँ की अशिक्षित नारी भी साम्राज्यवाद के निशान को यहाँ से फेंकना चाहती है। चोखी अपने जीवन को तुच्छ मानकर वॉरेन हेस्टिंग्स के बीज को इस पृथ्वि से अलग करना चाहती है। इन सारी घटनाओं को देखकर वॉरेन हेस्टिंग्स के मन में दो सवाल एक ही साथ जन्म लेते हैं - "ओ जीसस द हेल आयम और हमें इन्हीं लोगों को गुलाम बनाना है।"[4] लेकिन साम्राज्यवादी शक्तियों के मन में अनजाने ही परिवेश के प्रति भय हुआ। क्योंकि वहाँ की स्त्री भी अपने देश के प्रति चिंतित है। स्त्री चिंता करती है तो घर-परिवार, बच्चे सब बदल जायेंगे। इसमें शंका तो नहीं। उदय जी चोखी जैसे फैन्टसी पात्र के ज़रिये आज की युवतियों को और

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिंग्स का सांड - पृ. 142
2. वही - पृ. 143
3. वही - पृ. 143
4. वही - पृ. 112

भी आगे आने का आह्वान देते हैं। क्योंकि चोखी की मृत्यु के उपरान्त और दूसरा चोखी का जन्म नहीं हुआ। इसलिए साम्राज्यवादी शक्तियाँ दुर्बल देशों को गुलाम बनाकर, वहाँ की संपत्ति लूटकर, कंपनियों की स्थापना करके उसे अपने बाजार बनाकर, देश, गाँव एवं ग्रामीण सभ्यता का विनाश करके आगे बढ रही हैं। उदय जी हमें इस अवसर पर याद दिलाते हैं - "क्या कभी पाप अन्याय और अनैतिकता के बिना कोई साम्राज्य बनता है।"[1] लेकिन मुगल शासक हमारी मिट्टी में धुल गयें। लेकिन पूँजीवादी समाज मिट्टी को लूटता है। परंपरा को तोडता है। कहानी के बीच-बीच में वॉरेन हेस्टिग्स को 'माक्बत' की याद आती है - "इफ यु हेव टु डिफीट देम यू हैव टु किल देयर मेमरीज यू हैव टु शुट देयर स्टोरीज़।"[2] साम्राज्यवादी शक्ति हमारी परंपरा, लोक कथाएँ, हमारी स्मृति और सबको छिन्न भिन्न करके उपनिवेशी सभ्यता के अनुकूल समाज को स्वप्न देखने को विवश करती है।

वॉरेन हेस्टिग्स ने भारतीय भाषाएँ सीखीं, गीता का अनुवाद कराया, भारत का नक्शा लुटियन से करवाया, भारतीय मानसिकता की जानकारी 'बुतु' (मित्र) से समझा और ये जानकारियाँ अपने देश की ओर भेजी। स्थाई भूमि का बन्दोबस्त किया और शासन के लिए नये नियम लागू किये। इन सब नियमों के माध्यम से आनेवाले लगभग दो सौ सालों को अंग्रेज़ी शासन की नींव रखी जिसमें शोषण और बर्बरता का इतिहास बार-बार दोहराया जाता था। हमें देखना चाहिए कि ये सब साम्राज्यवाद की जडों को मजबूत करने का षड्यंत्र थे। इस तंत्र से औपनिवेशिक

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिग्स का सांड - पृ. 112
2. वही - पृ. 112

व्यवस्था का विस्तार हुआ। मल्टी नाशनल कंपनी देश को कब्जा कर रही है और नये नये बाज़ार खोल रही हैं। वे हमेंलूटती चलती जा रही हैं और सहर्ष हम उस के शिकार बन रहे हैं। गुलाम देश की भाषा एवं संस्कार का विनाश औपनिवेशिक मनोरंजन है। उदय जी ने इसकी ओर भी इशारा किया - "वे लोग वही खायेंगे जो अंग्रेज खाते हैं, वही पिएगे जो अंग्रेज़ पीते हैं। वे वही भाषा बोलेंगे जो अंग्रेज बोलते हैं उनके कपडे, विचार, स्वप्न और आकांक्षाएँ अंग्रेजी होंगी। वे हर इंडियन चीज़ से घृणा करेंगे।"[1] अर्थात् स्वदेशी वेश भूषा और खान-पान का तिरस्कार और विदेशी वेशभूषा को नमस्कार के तहत हम पाश्चात्य बनने का गर्व करते हैं। हमारे इस बदलाव ही साम्राज्यवादी शक्ति के कारण है। साम्राज्यवादी शक्ति बाहरी आधिपत्य से चली गयी। फिर भी उनकी छायाओं ने हमारे ऊपर अधिकार जमाया। चाहे वह बाज़ार के रूप में हो, चाहे उपभोग के रूप में हो, चाहे ब्रांड के रूप में हो, चाहे विज्ञापन के रूप में हो। इस संदर्भ को उदय जी फ्रांसीसी डयरेक्टर जनरल टुप्ले के विचार के ज़रिए भारतीयों को अवगत कराते हैं - "वे हमारी गुलाम छायाएँ हैं। इंडिया में हमारा सारा प्रशासन वही चलाएँगे। हम जब इंडिया को छोड यूरोप आएँगे तब भी वहाँ हमारी यही गुलाम छायाएँ राज़ करेंगी। उस इडिया में हमारा ही राज होगा।"[2] आज इसकी छायाएँ हम पर शासन करती ही रहती हैं। ये छायाएँ नवउपनिवेशवाद का प्रतीक है। यह उपनिवेशवाद से भी खतरनाक है। भारत में 'डुप्ले' का राज चल रहा है। डुप्ले के राज्य में फाक्टरियों और मशीनों

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिग्स का सांड - पृ. 109
2. वही - पृ. 34

ने जीवन और समाज को बदल डाला। विज्ञान, वाणिज्य, उत्पादन, व्यापार, युद्ध, नियति और आयात, श्रम, वेतन, शेयर बाजार, ब्याज, बैंकिंग खरीद फरोख्त, कर्ज, पूँजी, जमा, घाटा और मुनाफा.... वगैरह वे मूल कारक थे, जिनकी बुनियाद पर वहाँ का मानवीय जीवन टिका हुआ था और उसी से नियंत्रित था। यही राज चल रहा है भारत में भी। यहाँ कुलाँचे मारने के लिए जंगल नहीं, सीग लडाने और जोर आजमाइश के लिए संगी नहीं, न चरवोह की हांक थी, न उनकी बाँसुरी की तान, बूढ़े दादा जी नहीं थे। दीपावली, एवं गोपूजा का परिवार नहीं था। गोवर्द्धनपूजा नहीं, मृत्यु पर गरुड पुराण का पाठ नहीं होता था, मृत्यु के बाद कोई वैतरणी न थी। जिसे पार करने के लिए गाय की पूँछ पकडने की जरूरत हो। इसलिए गोदान नहीं होता था। गायों की व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं होती, यहाँ के कृषि जीवन के केन्द्र में गाय और बैल नहीं थे, इसलिए वैसे उत्सव और त्योहार नहीं थे। हमारे यहाँ गाय पृथ्वी का प्रतीक है। अर्थात साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपनी संस्कृति के हिस्सा होनेवाली गाय को भी यहाँ से अपने देश में एक्स्पोर्ट करती हैं। वॉरेन हेस्टिग्स पाँच ब्राह्मण गाय और सैम्युएल टनर्न द्वारा दिये एक सांड के साथ इंग्लेंड आया। इंग्लेंड में गोरे कर्मचारी उन्हें खाना और पानी देने, आते तो उनके चेहरे में उन्हें अपनी हत्या दिखाई। गायों ने खाना छोड दिया, एक एक कर बीमार पडने लगी और मरने लगी। क्योंकि गाय और साँड भारतीय परिवेश में जीना चाहते हैं, यहाँ के पानी, खाना सब कुछ उनकी स्मृतियों में है। चौथी गाय मरी तो वॉरेन हेस्टिग्ज ने कर्मचारियों से कहा कि - "इस बची हुई ब्राह्मणी गाय को इस साँड से क्रोस कराओ। हो सकता है कि इसकी कोई प्रजननी पैदा हो। अगर यह एक्सपेरिमेंट

सफल रहा तो इंडिया से जबू, साहिवाल, काकरेंज, हालिकार जैसी उन्माद नस्ल के गाय बैलों को इस सांड यहाँ इंपोर्ट किया जा सकता है। मीट उद्योग को भी।"[1] पाँचवीं गाय को मरने के बाद साँड अकेला बन गया। तब वह प्रतिरोधी बन जाता है। वह हर अंग्रेज पर हमले करने लगा। कोई गोरा कर्मचारी या अतिथि आता, वह अपने नथुनों से डरावनी फुँसेट छोडता हुआ उसे मारने के लिए दौडता है। लोग चिल्लाते हुए भागा। किसी अंग्रेजी को यूनिफार्म में देखता तो उसे संभालना मुश्किल था। वह एक प्रचंड, उन्मत्त, पागल, और वहशीपन की आग से जलता दुर्धर्ष साँड था। उनकी प्रवृत्तियों से डर कर बंगले के मुख्य फाटक पर एक तख्ती लगा दी गई, जिसमें मोटे-मोटे लाल अक्षरों से लिखा था - "बी वेयर आफ अ मैड डेडली इंडियन बुल।"[2] वॉरेन हेस्टिग्स इस साँड को अपने देश के लिए उपयुक्त प्रोडेक्ट मानकर ले गया लेकिन यह उनके खिलाफ खडा हो गया है। साँड बग्धी की ओर किसी साइक्लोन तूफान, चक्रवात की तरह लपका और अपने सींग में फँसाकर उसने बगधी को वारेन हेस्टिग्स, उसकी पत्नी और राईस के समेत हवा में उछाल दिया। हेस्टिग्स की पत्नी के सिर में चोट आई। वॉरेन हेस्टिग्स की यह बग्धी, जिसे उस सांड ने चकनाचूर किया, वह 'इम्पीरियल' बग्धी थी। इंग्लैंड की शाही बग्धी। औपनिवेशिक व्यवस्था के खिलाफ खडे होनेवाले उस साँड को 1795 रात नौ बजे इम्पीरियल आर्मी की एक टुकडी ने मार दी। साम्राज्यवादी शक्ति ने सोचा कि उस रात से उपनिवेशी प्रतिरोध समाप्त हो गया। वास्तव में वहाँ

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिग्स का सांड - पृ. 152
2. वही - पृ. 158

से प्रतिरोधी चेतना बुलन्द हुई है। कहानी के अंत में उदय जी ने पाठकों के लिए चेतावनी दी है - "वह झाँड अभी मरा नहीं है।"[1] अर्थात् हम सबको अपने जंजीरों को तोडकर उपनिवेश के विरुद्ध लडना चाहिए। उनके रचनात्म कौशल के ज़रिए दो सौ पचास के पहले की कहानी आज की कहानी लगती है।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' भूमंडलीय संस्कृति में हारनेवाले असफल, नगण्य एवं बहिष्कृत कवि रामगोपाल की कहानी है। रामगोपाल ने उत्तराधुनिक संस्कृति के लालच में पडकर, उपभोक्त संस्कृति में फंसकर अपने को बदलने का प्रयत्न किया। इसके लिए उन्होंने दो ही फैसला लिये। एक तो अपने नाम को बदलना और दूसरा एक स्कूटर खरीदना। पहले फैसला को अपना नाम उल्टा कर 'पॉल गोमरा' बनाकर उन्होंने पूरा किया। इस इलक्ट्रोनिक और तकनीकी युग में बढ़ते समय के साथ चलने उनके स्कूटर खरीदने का फैसला उदारीकरण ने आसान बना दिया। उदय प्रकाश ने स्कूटर को प्रतीकात्मक ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत किया। "वे मानते हैं कि 'स्कूटर' प्रतीकात्मक रूप से इस नवऔपनिवेशिक, भूमंडलीकृत, उपभोक्तावादी, बाजारु, साम्राज्यवाद का सशक्त प्रतिरोध है।"[2] जैसे गाँधीजी ने इंग्लैंड के विशाल उद्योग के विरुद्ध चरखा अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध लडाई में एक प्रमुख अस्त्र बना। उसी तरह पॉल गोमरा सोचता है कि तकनीकी के इस युग में 'स्कूटर' मनुष्य के पैरों का ही नैसर्गिक विकास है। पॉल गोमरा का स्कूटर चलाना नहीं आता। फिर भी मित्र के पीछे बैठकर वह स्कूटर पर

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिग्स का सांड - पृ. 158
2. वही - पृ. 137

यात्रा करता है। पॉल गोमरा के ज़रिये आधुनिक बनने के लिए दौडनेवाले आदमी का चित्रण करता है। पॉल गोमरा कवि के साथ एक पत्रकार भी था। इसलिए चारों ओर की सूचनाओं को हमारे सामने रखता है। वह कहता है - "....वातानुकूलित गाडियों में बैठकर भक्तों की उल्लास यात्रा पोस्ट मॉडेर्न डिवोषन है सौ-सौ हत्या करनेवाला औरतबाज पोस्ट माडेर्न हीरो है, महात्मा गाँधी को गालियाँ सुनानेवाला समलैंगिक पोस्ट मोडेर्न मीडिया सुपर स्टार है, बेटीनुमा बालिका के साथ एक सचिव का अप्राकृतिक यौन-सम्बन्ध पोस्ट मोडेर्न सेक्स इन्स्टिग्ट है राज्य-रक्षा अधिकारी द्वारा राज्य रहस्य का व्यापार पोस्ट मोडेर्न डिफन्स है।"[1] इस प्रकार पददलित लोगों को देखकर पॉल गोमरा अत्यन्त दुःखी होता है। जिस समाज का आत्मविनाश हो गये उसका प्रतिनिधि है पॉल गोमरा। पॉल गोमरा को लगातार महसूस हो रहा था कि उनके कंधे पर धनुष-बाण टंगा है, कमर के इर्द-गिर्द भेड की काल लिपटी हुई है, उनका रंग काला, होंठ मोटे, नाक चपटी और बाल घुंघराले हैं। और उनकी भाषा में बहुत कम शब्द है। उनके पास जो कुछ शब्द है वह सभ्यता और समय का शब्द है। 'पॉलगोमरा की इस स्थिति को देखकर उदय प्रकाश बताते हैं - "जब वे दिल्ली की किसी इमारत, लड़की या दूकान को देखकर कुछ कहना चाहते उनके गले से घों-घों, हा-हूँ! कोइचाग भोखो सोखो, हो हो जैसे निकलता है।"[2] अर्थात् अपनी भाषा से हारकर जीनेवाले लोगों की स्थिति है पॉल गोमरे की भी। अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के बारे में कुछ कहने के लिए असमर्थ होनेवालों का प्रतिनिधि हैं पॉलगोमरा।

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - वॉरेन हेस्टिग्स का सांड - पृ. 126
2. वही - पृ. 140

'मौंगोसिल' कहानी उत्तराधुनिक विकास जन्य विनाश की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। उदय जी साम्राज्यवाद को प्रलय का रूप देकर कहते हैं - "अलग सत्ताओं द्वारा अधीग्रहीत कर ली गई धरती पर किसी टउनप्लानर या किसी कोलोनाइज़र के नक्शों में दिखाई दे जाती है। पूँजी और सत्ता के हर रोज फैलते साम्राज्यवाद की अभियांत्रिकी के बुल्डोसर मेट्रो रेल, टउनप्लानर किसी शोपिंग माल, बाँध खदाने, उद्योग या किसी पाँच सितारे होटल के रूप में।"[1] अर्थात भूमंडलीकृत युग में विकास का दौर तो बढ गया। विकास केवल एक वर्ग तक सीमित था वे संपन्न थे। उनके लिए शोपिंग माल और पाँच सितारे होटलों का निर्माण मेट्रो रेल आदि आ जाये तो स्थानीय लोग विस्थापित होते हैं। याने उनका अस्तित्व मिट जाता है। विकास के नाम से लाखों गरीबों की बस्तियाँ और सब कुछ एक मिनिट से खत्म होते हैं। जिस प्रकार मैंगोसिल रोगी का सिर मात्र मोटा हो जाता है। उसी प्रकार आज का विकास मात्र धन कुबेरों का है। सूरी जिस प्रकार मोटे सिर का बोझ सह नहीं पाता। उसी प्रकार का एकांगी विकास लोग सह नहीं पाते। सब को मिलाकर करनेवाले विकास से ही देश में शान्ती संभव हो जायेगी। असुरक्षा पर जीनेवाले हमारे मन में सबसे पहले आनेवाली बात और कुछ नहीं सिर्फ आज़ादी है। यहाँ जीने की स्वतंत्रता को साम्राज्यवादियों ने दूसरी रीति से हटप लिया। हमें इस मुखौटे को तोडना चाहिए। हमारी चिंता को जागृत कराने के लिए उदय जी यों बताते हैं - "अंग्रेजों के टइम पर हमने सुभाष बोस के आई.एन.ए को अपना ब्लड दिया था। बर्मा तक जाकर इंडिया की आजादी के लिए हमारा

---

1. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - पृ. 78

लोग लडा। अब हम अपनी आज़ादी के लिए लडेगा लिख ले लो कश्मीर से पहले हम इंडिया से आज़ाद होगा।"[1] पूर्वजनों द्वारा हमारे हाथ में गई 'आज़ादी' हम पाश्चात्य शक्तियों को देकर प्रगति का स्वप्न देख रहे हैं। लेकिन प्रगति वहाँ नहीं होगी। हमारी अस्मिता नष्ट हो रही है। हमारे जैसी तीसरी दुनिया यहाँ नहीं है। केवल दो ही दुनिया है। एक तो अन्याय करनेवालों की दुनिया और दूसरे अन्याय सहनेवालों की दुनिया। उदय जी इस पर सोचनेवाले सूरी को हमारे सामने लाकर उन्हीं से अवगत करवाते हैं - "....अब तीसरी दुनिया नहीं है। दो ही दुनिया है और वो हर जगह है। एक दुनिया वह जिसमें बाकी वह सारे लोग रहते हैं, जो अन्याय सहते हैं।"[2] लेकिन तीसरी दुनिया के लोग विकास की ओर जा रहे हैं। लेकिन भूमंडलीय व्यवस्था इस मार्ग पर खडे होकर पीछे की ओर भागती है। जैसे हमारी प्राकृतिक संपत्ति को लूटकर, उस पर पेटेंट लेकर और इन्हीं प्रोडक्टों को हमारे यहाँ नई प्रोडक्ट के रूप में बिक्री करके हमें डराते हैं। इससे उनका लक्ष्य मोटा मुनाफा कमाना है। इस अवसर पर साम्राज्यवादी शक्तियों से उदय प्रकाश आवाज़ उठाकर बोलते हैं - "....वे बर्बर, मूर्ख, असभ्य और लालची है। पैसा कमाने की उनकी भूख कल्पनातीत है।"[3] ये भूख हमारे ऊपर बाजारवाद, मीडिया एवं विज्ञापन उदारीकरण, ब्रांड, विकास के परिणाम होनेवाले विस्थापन सम्बन्धों का टूटन, संस्कृति का नाश आदि रूप धारण करके मंडरा रहे हैं। उदय जी आनेवाली

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 20
2. उदय प्रकाश - मौगोसिल - पृ. 25
3. वही - पृ. 135

पीढ़ियों से पूछते हैं - "भारत की नई पीढी क्या आनेवाले दिनों के आकार देगी?"[1] यही सोच उनको सौर उनके साहित्य को समकालीन साहित्य से अलग रखती है। यही चिंता उनके मन में बार-बार इसलिए आयी कि आज की युवापीढी अपनी बेमतलबी हरकतों की वजह से पथभ्रष्ट हो चुका है। पेप्सी पीकर, मोबइल पर बातें करते, एक हाथ में एक लड़की को थामते, सलमान खान और शारूह खान को अपना आदर्श समझकर इधर उधर भटकनेवाले लोग जिन्दगी का मकसद मानते हैं। साम्प्रदायिकता, अलगाववाद, उग्रवाद, दलित-नारी शोषण, हिंसात्मक वृत्ति आदि से देश चूर-चूर होकर खंडित होनेवाला है। हमारी आर्थिक नीति एवं उद्योग नीति साधारण जनजीवन तथा किसान मज़दूरों को तडपा रही हैं। आदमी भोगी बन गया है। योगी यहाँ से गायब हो रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता भारत को निगल रही है। इसी से हमें बचाने के लिए गाँधीचिंतन अनिवार्य है। लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि गाँधी चिंतन या गाँधीवाद नाम की कोई चीज़ नहीं। गाँधीजी ने कहा है कि मैं अपने पीछे कोई संप्रदाय नहीं छोड जाता हूँ। मैंने तो केवल जो शाश्वत सत्य है, उसको अपने नित्य के जीवन और प्रश्नों पर अपने ढंग से उतारने का प्रयास मात्र किया है। डॉ. वनजा जी ने गाँधी चिंतन के बारे में यों कहा है - "गाँधीजी ने सही ही कहा कि जिस शाश्वत सत्य को उसने उनके जीवन में उतारना चाहा, उसे ही हम गाँधीवाद कहते हैं। गाँधीवाद एक संपूर्ण जीवन दर्शन है। वह जीवन दर्शन बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्धि में सुरसरी के समान सबका हित चिंतन करते हुए धर्म, दर्शन,

---

1. उदय प्रकाश - मौगोसिल - पृ. 135

समाज, साहित्य आदि क्षेत्रों को अप्लावित कर रहा था।"[1] उदय प्रकाश गाँधी चिंतन से दूर नहीं। उनकी रचनाओं में गाँधी चिंतन हम देख सकते हैं। उदय जी बताते हैं - "वह आज़ादी किसके लिए थी, जो साबरमती के एक बूढ़े संत अपने करिश्मे से बिना तलवार और ढाल के 'वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाण रे' गाते हुए पचास से कुछ साल पहले पैदा की थी? क्या उस संत को इसलिए पिस्तौल से उडा दिया गया था, ताकि वह भविष्य में कभी कोई करिश्मा पैदा न कर पाये?"[2] अर्थात गाँधीजी का पुनः अवतार होगा। गाँधी चिंतन की जरूरत भारत में है। इसी चिंतन से यहाँ सुधार होगा - "क्या पश्चिम की कम्पनियों के राज के खिलाफ इस बार गदर होगा? क्या इस बार ईस्ट इंडिया कम्पनी की तरह फिर कुचल डालेगी और फिर उसके बाद क्या कोई अधनंगा, लँगोटी लगानेवाला, वंचितों और दरिद्रों का एक नया प्रतीक फिर कहीं सटोरियों, दलालों, अपराधियों और ठगों की इस भ्रष्ट बावन - बनिया बाजार - व्यवस्था को निहत्था चुनौती होगा? इस मार्केट एंपायर में जो सूरज एक बार फिर नहीं डूबता दिखाई देता, वह बंगाल की खाडी या हिन्द महासागर में फिर एक बार डूबा दिया जाएगा।"[3]

उदय प्रकाश अपनी रचनाओं के ज़रिए साम्राज्यवादी साजिशों की प्रक्रिया को गहरी अंतर्दृष्टि से परखने का मौका देते हैं। स्थानीयता को पकडकर नव औपनिवेशिक व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध जाहिर करने का प्रयास किया है। ये प्रयास अन्य समकालीन रचनाकारों से उदय जी को किस प्रकार भिन्न बनाया। हम देखेंगे

---

1. डॉ. वनजा - हरित भाषा वैज्ञानिक विमर्श - पृ. 153
2. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 66
3. वही - पृ. 67-68

2.1.1 स्थानीयता

आधुनिकता में जो केन्द्रियता थी वह समकालीनता में नष्ट हो गई। याने समकालीनता की यात्रा केन्द्र से परिधि की ओर है। इसके तहत अनेक प्रकार की समस्याएं हमारे सामने आयीं। उसमें स्त्रियों, दलितों, विकलांगों, वृद्धों और आदिवासियों की समस्याएँ प्रमुख हैं। इन समस्याओं को मिटाने के लिए प्रतिरोध एवं क्रान्ति की जरूरत है। जब क्रान्ति की लहरें सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर तक पहुँचता है तब समाज की प्रगति होती है। अपने समय के साहित्यकार इस प्रगति को अपने समय की माँग समझते हुए अपनी ज़मीनी पहचान या स्थानीयता को केन्द्र में रखा। स्थानीयता एक ऐसा मुद्दा है जो अपनी जडों की ओर लौटकर, स्थिति को समझने में मदद करती है साथ ही साथ स्थानीय लोगों के जीवन यथार्थ की चर्चा भी करती है। स्थानीयता की चर्चा करें तो हमारे सामने इंदिरा गाँधी की याद आती है। विवादों के बावजूद उन्होंने स्थानीयता को बनाये रखने के लिए 1969-70 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया। इसमें नयेपन की कमी होने के कारण बहिष्कृत करने की चेष्टा भी यहाँ हुई। फिर भी अपनी जडों और स्थानीयता के प्रति इंदिरा जी का पूरा ख्याल था। उनके इस ख्याल के परिणाम स्वरूप भारतीयों के मन में कस्बे एवं गाँव एकदम साफ दिखने लगे। वहाँ के लोग बैकों से जुडने लगे। अपना आदान प्रदान आसान हो गया, भारतीयों ने दुबारा फिर अपनी अस्मिता पहचानने लगी। इस स्थानीयता की पहचान हमारी परंपरा से जुडी हुई है।

समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में स्थानीयता को सुरक्षित एवं मज़बूत करते हुए आगे की ओर जा रहे हैं। टी.एस. इलियट ने कहा है कि समर्थ

कवि में परम्परा जीवित रहती है। कवि परम्परा का मूल्यांकन आधुनिक युग के संदर्भ में करता है। इसलिए समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं अपनी धरती, अंचल, प्रकृति, श्रमिक, संवेदन शील मनुष्य, उनके सुख-दुःख, परिवेश आदि को स्थान देते हैं। इसके तहत ये सारी रचनाएँ लोकपरता की कोटी में आती हैं। समकालीन रचनाकार उदय प्रकाश ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज की वास्तविकताओं और सामाजिक जरूरतों के बदलाव के प्रश्नों को मुख्य स्थान दिया। अपनी रचनाएँ गाँव, मज़दूर, किसान, पेड, स्थानीय कवि, श्रमिक लोग लोक संस्कृति आदि से भरपूर हैं। ये सब नवउपनिवेश के प्रति प्रतिरोध करने के लिए उदय जी ने अपनाया। अरविंद त्रिपाठी के मुताबिक - "अपने समय से उलझना एक जागरूक कवि का धर्म है पर उदय प्रकाश कुछ ज्यादा उलझ गए लगते हैं।"[1] इसलिए उनकी रचनाएँ समस्याओं से सवाल करती हैं और स्थानीयता से जुडकर विश्लेषण करने के लिए व्यापक संदर्भ देती हैं।

2.1.2 गाँव

कवियों का एक बडा वर्ग मध्यवर्ग की कोटी में आता है। यह वर्ग गाँव से शहरों और शहरों से महानगरों की ओर जा रहा है। उदय प्रकाश आज दिल्ली के रचनाकार हैं। लेकिन उनकी जडें गाँव सीतापुर से जुडी हुई हैं। अतः उनका लगाव अपने गाँव से है। गाँव से अनेक लोग शहर में रोजी-रोटी की तलाश के लिए आते हैं। उदय जी के मन में गाँवों की स्मृति होने के कारण गाँवों के लोगों को वो जानते

---

1. अरविन्द त्रिपाठी - कवियों की पृथ्वि - पृ. 242

हैं। उन्हें देखकर गाँवों की याद आती है। उनके मन में यही चिंता होने लगी कि भारत माता ने कभी भी इस बुरी दुनिया के बारे में सोच तक नहीं होगा। शहर को उदय जी बुरी दुनिया मानते हैं। फिर भी उनके बच्चे शहर में आ रहे हैं। उनकी चर्चित कविता 'आलबम' इसकी ओर इशारा करती है। इस में आज की अमानवीयता पर चिंता भी है। स्मृतियों का खजाना 'आलबम' हमारे सामने खुलता है-

"उसने आलबम निकाला और
सोचने लगा।
बचपन के दिनों में
अम्मा के दिमाग में इतनी
खराब दुनिया न रही होगी
उसने सोचा भी न होगा कि वह
मुझे कहाँ भेज रही है।
उसने देखा कि एक क्रीज की हुई
चौखानेदार कमीज में वह
हँस रहा है
पीछे एक चादर टंगी है।
जिसके बीच में एक खूब बडा गुलदस्ता है।
कमरे में अभी तक
इतना उजाला था कि
वह आनेवाली बहुत सी चीज़ें
देख सकता था
यह एक किताब थी

वह सोचने लगा, बुरे दिन जायेगा
जैसे अच्छे दिन आये।"[1]

इस कविता से उदय जी हमारा ध्यान दूसरी तरफ ले जाते हैं। उनका कहना यह है कि जीवन में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ होती हैं। हमारे जीवन में यदि बुराई है तो अच्छाइयों की प्रतीक्षा करो क्योंकि सुख-दुःख मिश्रण है ज़िंदगी। कोई भी अवस्था स्थिर नहीं।

उदय प्रकाश निर्मल एवं शान्त, ग्रामिण वातावरण की संतान है। इसलिए उनके व्यवहार में निर्ममता एवं संवेदनशीलता नज़र आती है। गाँव से जुडे रहने के कारण उनकी रचनाओं में लोक जीवन का चित्रण है। उनकी चर्चित कविता है 'बढई की बेटी'। इस कविता जंगल से रिश्ता जोडनेवाले बढई और उनकी बेटी का है। बढई का परिवार जंगलास्त्रित आदिवासी है। जंगल की लकडी बेचकर वे जीवनयापन करते हैं। फिर भी जंगल को मिटाता नहीं। क्योंकि उनके लिए जंगल अन्नदाता और सब कुछ है। बढई के बारह साल की बेटी लकडी काटने के लिए जंगली जा रही है। उदय जी की स्मृति देखिए-

"इस वक्त
जब जानना चाहते हैं
पेड-बढई की लडकी
तेरे सपनों में कौन होगा

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर कबूतर - आलबम - पृ. 36-37

कौन सा पेड ?
अपनी उत्तेजना में पत्तियाँ झाडकर
अपनी छाल उतारकर
तुझे रोटियाँ देता
मेरी उम्र क्या होगी इस वक्त
बढई की नन्हीं सी लडकी।"[1]

ऊपर की पंक्तियाँ उदय जी की स्मृतियों की धारा है। लेकिन ये स्मृतियाँ आज प्रासंगिक भी हैं क्योंकि बढई की बेटी आज की बेटी है, इसलिए वह जंगल का विनाश करेगी और अपनी संस्कृति (आदिवासी) को भूल जाएगी। इसलिए कवि पेड बनकर आज पूछते है कि तेरे सपनों में कौन होगा या कौन सा पेड होगा? यह सवाल आज के हम जैसे बच्चों से है।

'नींव की ईट हो तुम' कविता में लोक जीवन के विभिन्न क्रिया व्यापार अनायास ही उद्घाटित हो गए हैं। पीपल की छाँह, हरियाले का घोसला, अचार का तेल, कपास की बाती, ढिबरी धुआ, छप्पर, नदी, मछली, सीपी, पत्थर, सोता, पतंग, पक्षी, झूले, मालदह, गोंढ से बचपन निस्वर हो गई है।

"पीपल होती तुम
पीपल दी दी
पिछवाडे का तो
तुम्हारी खूब घनी - हरी रहनियों में

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - बढई की बेटी - पृ. 14

हारिल हम
बसेरा लेते
हारिल होते हैं हमारी तरह ही
घोसले नहीं बनाते कहीं
बसते नहीं कभी
दूर पहाडों से आते हैं
पीपल की छाँह
.....उडते तुम्हारे भीतर।"[1]

उदय प्रकाश की संवेदना और भावुक मन विसंगत स्मृतियों में जब पीछे लौटते हैं और यादों में विलीन होते हैं तब भी वे लगातार विलुप्त होती हुई संस्कृति के प्रति चिन्तित दिखाई देते हैं। उस समय के रिश्ता-नाते की आर्द्रता आज नहीं है। परिवार सब टूटने लगते। 'नीव की ईट हो तुम' कविता से उदय जी यह बताना चाहते हैं कि भाई-बहनों के बीच की दृढता को और भी मजबूत करना चाहिए। साथ ही साथ मूल्यों को सुरक्षित करना चाहिए।

उनकी कई कविताओं में गाँवों से अपने आत्मीय सम्बन्ध रखनेवाले जनों का जिक्र किया गया है। उनसे जुडे हुए सांस्कृतिक महत्व की वस्तुओं का उल्लेख करने में वे समर्थ हैं। उनकी 'बचाओ' कविता का अंश इसी संदर्भ में देखिए-

"बचा लो मेरी नानी का पहेलियों
वाला काठ का निला घोडा

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - नींव की ईट हो तुम - पृ. 13

संभाल कर रखो अपने लट्टू
पतंगों दुपा दो किसी सुरगादित जगह पर
देखो हिलता है पृथ्वी पर
अमरूद का अंतिम पेड
.....
किसी संग्रहालय को भेजूँ पिता का बसूला
माँ का करधन और बहन के बिछुए मैं।"[1]

इसी तरह 'अबूतर-कबूतर' संग्रह की सबसे लंबी कविता 'वैरागी आया है गाँव में' भी संस्कृति के कई पक्ष दृष्टव्य हैं।

"बंधु एक आध तबेला भात लाओ
पुराने सिरीकमल चावल का
अरहर की दाल
थाडी कुटुक्कुडिया घी और
अचार आम का तो हम धन्य हो।"[2]

'अरेबा-परेबा' गाँव से जुडी हुई स्मृतियों की कहानी है। अपने बचपन की स्मृतियों आज भी उनके मन में हैं। उदय जी स्मृतियों का खुलासा यों करते हैं - "गाँव से दस मील दूर तक एक दूसरे गाँव सिंहाल में भी हमारे खेत थे। सिंहाला पहाडी के ऊपर, जंगल के पार बसा हुआ एक छोटा सा गाँव था। हमारे गाँव की मिट्टी बलुहन थी, जिससे यह धान, कोदा, कुटकी, तिल जैसी फसलें ही होती थी।

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - बचाओ - पृ. 21
2. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - वैरागी आया है गाँव - पृ. 95

जबकि सिंहाल में काली चिकनी मिट्टी वाले खेत थे, जहाँ सब कुछ पैदा होता था। गेहूँ, चना, अलसी और धनिया थी। सिंहाल तक पहुँचाने के लिए कई पहाडी जंगली नाले और लगभग साढे चार मील लंबा, एक धना जंगल पार करना पडता था। इसे रिछई जंगल कहते थे। ...सोमलिया जब रात में सिंहाल से लौटकर आता, ...तरह तरह की चीज़ें निकालकर आँगन में फैलाया जाता। हरे रोएदार, जंगली पडोरे, पहाडी बेर शेर, की मुखारी, चार-चिरौजी, कठजमुनी, अमरूद, कादा, छतती, पुटु, छीदकांद, जंगली करौदा। ...सिंहाल के तालाब से पकडी हुई स्वादिष्ट सौर मछली। सोमलिया एक बार जंगली खरगोश के दो छौने लाकर दिये थे। जंगली खरगोश को हम 'खरहा' कहते थे।"[1] उदय जी ने दोनों खरगोश को नाम दिया अरेबा-परेबा। दोनों के लिए अपने फटे पुराने कपडों और लकडियों से एक घर बनाया। उनकी माँ दोनों को दूध देती थी। एक दिन के बाद अरेबा-परेबा को कोई ने चोरी की या पत्थर बनाये। उदय जी की माँ इस घटना के बारे में यों कहती है - "....ऐसी आवाज़ होने लगी जैसे कोई जीप या कार हमारे आँगन तक आ गई हो। मुझे अचरज हो रहा था कि ट्रैक्टर यहाँ आँगन तक कैसे आ गया? आँगन में इतनी तेजी रोशनी हो रही थी कि आँखों को कुछ दिखाई नहीं पडता था। मैं बुरी तरह से डर गई। ट्रैक्टर या जीप, कार जैसी होती हुई अलग तरह की आवाज थी।"[2] अर्थात ये ट्रैक्टर या जीप विकास एवं विनाश का प्रतीक बनकर हमारे सामने आवाज़ देकर आते हैं। विकास की रोश्नी में गाँव की संस्कृति नष्ट हो रही

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पृ. 89-90
2. वही - पृ. 108

है। अरेबा-परेबा विकास के परिणाम से नष्ट होनेवाले जंगली जानवरों का प्रतीक है। विकास से आज के सिंहाल गाँव की स्थिति भी उदय जी हमारे सामने उभार देते हैं - "....अब तो उस रास्ते के सारे नाले सूख गए है। जंगल भी उतना धना नहीं रहा। सरकारी फारेस्ट आफिसर और ठेकेदारों ने मिलकर काट डाला। जानवर भी नहीं बचे। बस इक्का दुक्का सियार कभी-कभार जरूर दिख जाते हैं।"[1] ये सूखी गाँवों की स्तिति केवल सिंहाल गाँव की नहीं, बल्कि भारत की समस्त गाँवों की स्थिति भी ऐसी है। सिंहाल गाँव केवल एक प्रतीक मात्र है।

स्मृतियों को लेकर अनेक रचनाएँ होती है। स्मृतियाँ 'नास्टेल्जिक' का भाव ग्रहण करती हैं। उदय जी बताते हैं - ".....किसी भी स्मृति में अपनी सुदूर काल की ऐंन्द्रिक संवेदना को, उसी चाक्षुषता, गंध, ध्वनियों और भ्रांतियों की संपूर्ण आवेगात्मक समग्रता में पुनर्रचित कर पाना हर किसी के वश में नहीं होता।"[2] लेकिन इस प्रकार बतानेवाले उदय प्रकाश की रचनाओं में स्मृतियों की गंध एवं गाँव की हर चीज़ के प्रति उनका लगाव हम देख सकते हैं। उनकी रचनाओं में किसी तरह के नास्टेल्जिया का भाव नहीं बल्कि उनके हृदय में ग्रामीण जीवन एवं गाँव रचे बसे हैं।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पृ. 108
2. उदय प्रकाश - ईश्वर की आँख - पृ. 287

2.1.3 आम जनता

उपभोक्ता संस्कृति में सबसे कठिन चुनौतियाँ आम आदमी को झेलनी पडी। पहले उनका जीवन बदत्तर थी, आज नवऔपनिवेशिक स्थितियों ने और भी नाजुक बना दिया। आज वे रोटी की तलाश में घूम रहे हैं। सरकारों में बदलाव आने पर उनकी स्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं आया। वे उदारीकरण, निजीकरण जैसे अनेक आर्थिक नीतियों के बीच में हैं। इसके तहत कोई लाभ उनको नहीं हुआ। शासन व्यवस्था भी भ्रष्ट है। राजीव गाँधी के मुताबिक - "सरकार गरीबों के लिए जो एक रुपया खर्च करती है उसमें से 15 पैसा ही उन तक पहुँच पाता है। शेष बीच के लोगों द्वारा हडप लिया है।"[1] इस स्थिति से आज भी साधारण जनता बची नहीं।

उदय प्रकाश आम आदमी को अपनी रचनाओं में अधिक महत्व देते हैं। युवा आलोचक कृष्ण मोहन के विचार इसको अधिक सार्थक करते हैं - "उदय प्रकाश गुलामी से आज़ादी के दौर का अथक चित्रण करते हैं। वे ऐसे कई सवाल उठाते हैं जो पूरी निरंतरता के बीच की राजनीति का प्रतिपक्ष खडा करते हैं।"[2] अर्थात् उदय प्रकाश राजनीति के प्रतिपक्ष में खडे होकर आम आदमी के पक्ष में खडे हैं। उनकी रचनाओं में आम आदमी का चित्रण अन्यत्र हुआ है।

---

1. राजकिशोर - उदारीकरण की राजनीति - पृ. 12
2. हंस - जनवरी 2006 - पृ. 76

उदय प्रकाश का एक श्रेष्ठ कहानी संग्रह है 'दत्तात्रेय का दुःख'। ये दुःख आम भारतीयों का दुःख है। इस संग्रह की चर्चित कहानी है 'उत्तराधुनिक उपभोक्तवाद'। यह कहानी उपभोक्तवादी संस्कृति में पडनेवाली जनता की कहानी है। कहानी का नायक कुत्ता है। यहाँ कुत्ता आम आदमी का प्रतीक है। दीपाली के दिन में बच्चों ने कुत्ते की पूछ पटाखे की लडी बाँध दी और आग लगा दी। कुत्ते भौंककर भागते हैं। इसी स्थिति में भागने वाले कुत्ते को देखकर ऐसा लगा कि ये तीसरी दुनिया के लोग हैं। हमारे पीछे भी भूमंडलीय खतरनाक तत्व बाज़ारवाद, विज्ञापन और अन्य समझौते जैसे पटाखे बाँध दी इसमें तपकर हम भी दिशाविहीन होकर भाग रहे हैं। भागनेवाले कुत्ते के सामने विनायक दत्तात्रेय (कथावाचक) हड्डी के टुकडे फेंक देता है। वह लालच में हड्डी चबा रहा था और पटाखे लगातार फूटने की वजह से चीख पुकार भी मचा रहा था। हमारी स्थिति भी इस कुत्ते के समान है क्योंकि भागनेवाले हमारे सामने शॉपिंग माल जैसे बाज़ारु जादू आये तो उसमें मुग्ध होते हैं और बाज़ार की ओर भागते हैं। ये कूटनीति साम्राज्यवादी साजिश की आज की निर्मिति है। लेकिन हम वहाँ भी फिट नहीं होते। हम जो भागनेवाले हैं हमें देखकर उदय जी बताते हैं - "यह बिलकुल तीसरी दुनिया का उपभोक्तावादी मनुष्य लग रहा है। उत्तर आधुनिक उपभोक्तावाद का दुर्दान्त दृष्टान।"[1]

साम्राज्यवाद के परिणाम स्वरूप 'अमानवीयता' का उदय हुआ। मानवीयता नष्ट हुई। साम्राज्यवादी शक्ति के प्रतीक के रूप में 'तिरिछ' को उदय जी ने प्रस्तुत

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख - उत्तराधुनिक उपभोक्तावाद - पृ.

किया है जो आजकल समूचे देश पर हावी हो गया है। उसके चंगुल में एक बार फंसना ही काफी है, फिर सारी ज़िंदगी उसके पैरों के तले दब जाएगी जैसा कि कहानीकार बताते हैं "काले नाग से सौ गुना ज्यादा जहर उसमें होता है। ...तिरिछ तो नज़र मिलते ही दौडता है। पीछे पड जाता है। उससे बचाने के लिए कभी सीधे नहीं भागना चाहिए। टेढा मेढा चक्कर काटते हुए, गोल मोल दौडना चाहिए।"[1] अर्थात भूमंडलीकरण का प्रभाव आज आम जनता पर ही पडता है। उदय जी ने इसकी ओर यों संकेत किया है - "अगर तिरिछ को देखे तो उससे कभी आँख मत मिलाओ। आँख मिलते ही वहआदमी की गंध पहचान लेता है और फिर पीछे लग जाता है। फिर तो आदमी चाहे पूरी पृथ्वी का चक्कर लगा ले, तिरिछ पीछे पीछे आता है।"[2] शहर के लोग ग्रामीण जनता पर अत्याचार करते रहते हैं। साम्राज्यवाद के सिद्धान्तों पर जीनेवाले लोग शहर में बसते हैं। उनके सिद्धान्तों में अमानवीयता को प्रथम स्थान है। अमानवीयता का दुखद चित्रण 'तिरिछ' कहानी में भरा हुआ है। यह कहानी स्वप्न शैली में लिखी गयी कहानी है। एक बच्चा अपने पिता द्वारा शहर में भोगी जानेवाली अमानवीय प्रवृत्तियों को हमारे सामने रखता है। उनके पिता गाँव के तिरिछ को मारते हैं और उसे जला करते हैं। क्योंकि गाँव में अमानवीय प्रवृत्तियाँ उग आये तो पिता जी उसे मिटाते हैं। लेकिन शहर के अमानवीय तिरिछ से पिता डरते हैं। शहर में अमानवीयता उच्च स्तर तक पहुँच गयी है। शहर में आये हुए पिता ने राह किसी से पूछी, लेकिन किसी ने नहीं दिखायी, पानी माँगता है उसे

---

1. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - तिरिछ - पृ. 4
2. वही - पृ. 15

नहीं देता। कहाँ-कहाँ जाता था वहाँ लोग मारते पीडते हैं। "कुछ साल पहले गर्मियों के दिनों में जब उन्होंने होटल में पानी माँग था, तो वहाँ काम करनेवाले नौकर ने उन्हें गाली दी थी। ....उसने पूछने पर या तो लोग चुप रहकर तेजी से आगे बढा गए होंगे।"[1] शहर से बाहर निकालने की कोई रास्ता न मिलने के कारण वह पिता पागल जैसा बन जाता है। पागल ठहराकर उन्हें मारता है। पिता मर जाता है। पिता की मृत्यु के कारण और कुछ नहीं केवल मानसिक सदमें और रक्तस्श्राव थे। उदय जी बताते हैं - "उनकी मृत्यु मानसिक सदमें और रक्तस्श्राव के कारण हुई थी।"[2] उदय प्रकाश हमें याद दिलाते हैं कि आज के भूमंडलीय समाज में आम जनता कहीं भी सुरक्षित नहीं। सब कहीं परेशानी ही परेशानी। चाहे घर में हो या बाहर। हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ बढ रही हैं। सन्नाटा जैसा भाव नहीं, यह भाव भी किताबों से पढा जा रहा है। पूर्ण रूप से हम पाश्चात्य बन गये हैं। इन सारी अमानवीय प्रवृत्तियों का प्रभाव जनता के मन पर पडा है। उदय प्रकाश 'घर या मज़ार' कविता में नयी सदी में टूटते हुए इनसान की हालत पर चिंतित हैं।

"इस बिलकुल नई सदी के शुरू में
आधी से अधिक उम्र का शरीर और कई सदियों की स्मृति
x x x x
समय की इस अनंत लंबी गुफा में
शोर और निशब्दता को किसी किताब की तरह पढता हुआ
कागजों, व्यर्थताओं और रोजगारियों को सहेजकर रखता हुआ

---

1. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - तिरिछ - पृ. 37
2. वही - पृ. 88

पचास से अधिक बरस खर्च हो चुके भविष्य को अतीत की तरह
अंधकार में देखता हुआ।
किसी दारुण पेड की तरह न कहीं से आता न कही जाता।"

उदय जी का संवेदनात्मक व्यक्तित्व यहाँ हम देख सकते हैं। उदय जी बार-बार चिंता करते हैं कि मैं आज जिस राज्य में जी रहा हूँ, वह मेरा हिन्दुस्तान नहीं, वह केवल हिंसात्मक गोद्दा है।

उपभोक्ता समाज में खुशी से जीना अत्यधिक कठिन कार्य बन गया है। हम सब संत्रासमय जीवन से अपने को कुछ समय के लिए मुफ्त कराना चाहते हैं। इसलिए हम मुस्कुराना सीखते हैं। फिर भी आज मुस्कुराना न आता। हमारा अपना और हमारे आसपास की जो घटनायें और अन्य अनेक समस्याएँ बीच-बीच में हमें कचोटती रहती है। फिर भी हम मुस्कुराने का विफल प्रयास करते हैं। उदय प्रकाश ने इस विफल परिश्रम को 'पसली का दर्द' में किया है-

"नहीं मुझे दूसरी तरह से
हँसने चाहिए था - उसने कहा
इस तरह से उसने
हँसने की कोशिश की
उसकी बायी कनपटी पर
एक नस मोटी होकर चिलक रही थी
और
उसकी दोनों हथेलियाँ

चेहरे से लौटने पर
भीग चुकी थी।"[1]

'भीग चुकी' इसका मतलब यह है कि अपने पर विश्वास न होनेवाला आदमी। अपने पर विश्वास न रखता है तो हम आगे की ओर कैसे जाएँगे। हर किसी को अपने पर विश्वास होना ज़रूरी है। उदय जी ने अपनी 'घोडे की सवारी' कविता में अस्तित्वविहीन आम आदमी का चित्रण किया। अस्तित्व या अस्मिता भूमंडलीय संस्कृति और भविष्य को संभालने की कोशिश में ही गायब हो चुका। कवि वर्तमान में जीनेवाले एक पिता को केन्द्र में रखते हुए अस्मिता की तलाश करनेवाले लोगों की पीडा हमारे सामने रखते हैं। पिता अपने बच्चों को खुशी देने के लिए घोडे का अभिनय करते हैं। अभिनय करने के बाद पिता आदमी बनने की कोशिश करता है। लेकिन वह हार हो जाता है। उनके गले से घोडे की आवाज़ (हिनहिनाहट) ही निकलती रहती है-

"उसने वापस आदमी होने की
कोशिश की और
उठकर बैठ गया
वह लडके को चुप करना
चाहता था
लेकिन उसके गले में से
थके हुए घोडे की
हिनहिनाहट निकली सिर्फ।"[2]

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - पसली का दर्द - पृ. 23
2. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - घोडे की सवारी - पृ. 39

इसका तात्पर्य यह है कि इस संस्कृति से अब वापस जाना संभव नहीं है।

अस्मिता की तलाश करनेवाले लोगों के मन में असुरक्षा और आशंका का भय जन्म लेता है। 'रात के फूल' जैसी कविता में उदय प्रकाश ने आज के मनुष्य के भय और असुरक्षा को रेखांकित किया है। वास्तव में यह कविता सारे वर्ग की त्रासद स्थिति को देखने का प्रयास है। आज मनुष्य अकेलापन, तनाव या उलझन में फंस गये हैं। उदय जी असुरक्षा का खुलासा यों करते हैं-

"एक फूल
रात की किसी आधी गठ में
घाव की तरह खुला है
किसी वजर प्रदेश में
और उसके रंग में जादू है
टूटती हुई गृहस्थी
छूटती हुई नौकरी, अपमान और असुरक्षा
के तनाव में टूटते हुए मस्तिष्क से
निकली है कोई कविता
जिसके क्रोध और दुःख और घृणा में
कला है।
खाली बरतनों, दवाइयों की शीशियों
और मृत्यु की गहरी गंध से भरे
कमरे में
हँस्ता है वह ढाई साल का बच्चा

और उसके दुधिया दाँतों में
गजब की चमक है।"[1]

यहाँ टूटती गृहस्थी, छूटती नौकरी, अपमान, असुरक्षा, बेरोज़गारी, शोषण, मृत्यु भय आदि से तडपते उपभोग संस्कृति की गिरफ्त में पडे आदमी का चित्रण है।

भूमंडलीय सभ्यता ने हमें संस्कृतिविहीन समाज में धकेल दिया हैं। यहाँ असत्य, भ्रष्टाचार, अपराध एवं हिंसा प्रमुख हैं। उदय जी अपनी कविता के ताने-बाने के ज़रिये इन सारी अमानवीय प्रवृत्तियों को दूर करने का आह्वान देते हैं। साथ ही साथ भारत के ताना-बाना जुलाहा, पूजारी, देवता, औलिया, मूल-फूल बादल, पानी, हरिजन, सिद्ध और फकीर आदि से बना है और कोई नहीं है, यह जगाने की कोशिश की जाती है। इस कविता की खासियत के कारण जबलपूर की प्रसिद्ध संस्था 'विवेचन रंग मंडल' वर्षों से इस कविता की नाट्य प्रस्तुति कर रही है। इसमें अतिशयोक्ति की कोई जरूरत नहीं। देखिए-

"हम हैं ताना हम है बाना
हमी चदरिया हमी जुलाहा हमी गजी हम थाना।। हम है ताना
नाद हमीं, अनुवाद हमीं, निशब्द हमीं गंभीर
अंधकार हम, चाँद-सूरज हम, हम कान्हा हम मीरा।
हमी अकेले, हमी टुकेले, हम चुग्गा हम दाना।। हम है ताना
मंदिर-महजिद हम गुरुद्वारा, हम मठ हम बैरागी।

---

1. उदय प्रकाश - रात का फूल - पृ. 34

x x x x

हम ही जुलाहा, हमी बराती, हम फूंका, हम छाना। हम है ताना।"[1]

उदय जी बार-बार बताना चाहते हैं कि भारत की अस्मिता हर भारतीयों की है। विदेशियों के लिए अस्मिता को बेचना नहीं चाहिए। क्योंकि यह अस्मिता हमारी जडों से निकलनेवाली है।

उदय प्रकाश अपनी हैसियत पर विश्वास न रखनेवाले आदमी का चित्रण मात्र नहीं करते बल्कि जीवन में अपनी अस्मिता के साथ वापस आने का आह्वान भी देते हैं। अर्थात उनकी रचनाएँ अपने समय से मुडभेड करते हुए मानवीय संकटों का जबर्दस्त प्रतिरोध है। 'किताब' नामक कविता आदमी को समाज में रहने लायक बनाने की ताकत देती है-

"मैं किसी कहानी का कोई पात्र नहीं
मैं किसी कविता का बिम्ब विधान नहीं
किसी दर्शनशास्त्र या सिद्धांत का प्रमेय नहीं
मैं किसी महान पवित्र शब्द के अंत में लगा हलंत नहीं
आदिम काल में खोयी गयी किसी प्राचीन भाषा की कोई लिपि को
मैं एक बिलकुल ठोस बहुत मामूली बहुत बेजार सा आदमी है

x x x x x x

एक छलांग के साथ मैं आना चाहुँगा अपने जीवन में वापस।"[2]

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - हम है ताना हम है बाना - पृ. 56
2. उदय प्रकाश - किताब - पृ. 76

उदय जी 'मैं' शैली को अपनाते हुए हम सबको अस्मिता के साथ जीवन में वापस आने का आह्वान देते हैं।

2.1.4 श्रमिक लोग

उदय प्रकाश की रचनाओं में 'श्रम' एवं 'श्रमिक लोग' मुख्य घटक हैं। क्योंकि श्रमिक लोगों के बिना कोई भी पद्धति अधूरी बन जाती है। उन्होंने 'इमारत' नामक कविता के द्वारा श्रम की महत्ता को हमारे सामने पेश किया है। कारीगर के श्रम से बडे बडे मकान या इमारत आकाश की ओर देखकर खडे होते हैं। मकान का मालिक या इंजीनीयर श्रमिक के बारे में सोचते नहीं। उस मकान में आनंद पूर्ण जीवन बितानेवाले लोग श्रमिकों की खांसी या पसीना देखते ही नहीं। लेकिन उदय जी यहाँ कारीगर की खांसी से इमारत को हिलाने का अंदाजा लगाते हैं और प्रतिरोधी स्वर को अत्यन्त सहानुभूति से दिखाते हैं-

"नहीं जनता इंजनीयर
या जानता है
कि इमारत हिल रही है
ज़ोर ज़ोर से
क्योंकि तीन सौ मील दूर
गाँवों में अपनी झिलंगी खटिया पर
पडा हुआ कारीगर
खांस रहा है ज़ोर ज़ोर से।"[1]

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - इमारत - पृ. 19

यहाँ कारीगर के श्रम दोहन की कथा है। भरपेट भोजन न मिलने के कारण श्रमिकों की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। वे सारी ज़िंदगी मिट्टी, गारा, चूना लेकर इमारत बनाने में लगे रहे। अब वे बूढे हो गये। उदय जी संवेदनात्मक दृष्टि से देख रहे हैं कि इमारतों की दीवारों में सीलन हो गई है। लेकिन कारीगरों के चेहरे में पसीना अभी तक सूखा नहीं। याने कि वे परेशानी में हैं, कोई भी नियम या व्यवस्था उनके लिए लागू नहीं, वे अत्यन्त दुःखी हैं।

श्रमिक लोगों के श्रम का पूर्ण लाभ उच्च वर्ग ले रहा है। आज की उपनिवेशी ताकतों के हाथ में ये लाभ पहुँच जाते हैं। श्रमिक लोगों के जीवन की विडम्बनाओं को 'वैरागी आया गाँव' कविता यों प्रकट है-

"हम जानते हैं कि तुम्हें अभी
परधान का खेत निराना है ठाकूर के
गेरु चराने है, पटवारी का चौखटा बनाता है
पंडिज्जी की रसोई के लिए
लकडी चीरना है, पटेल का हल चलाना है,
ताकेंद आये महाजन के
कारिदे को फिर से टरकाना है।"[1]

परिश्रम करनेवाले लोग आज हाशिए पर हैं। आज श्रमिक लोगों की जीवन धारा 'श्रम' बाज़ार में बेच रहे हैं। मुनाफा कमाने की नीति मात्र बाज़ार में

---

1. उदय प्रकाश - वैरागी आया है गाँव - अबूतर-कबूतर - पृ. 45

चल रही है। उदय प्रकाश इस पर चिंतित होकर 'सुराही' नामक कविता के द्वारा 'कुम्हार' से कहते हैं-

"बाजार के मुताबिक
तैयार करो सुराही
नहीं तो वह गोडा-सा-तुन्दियल
टेढा-मेढा हाथी का बच्चा, ढेकेदार कहेगा।"[1]

श्रम की शक्ति को माननेवाले उदय प्रकाश भूमंडलीय संस्कृति में कुम्हार और कारीगरों की स्थितियों से दुःखी हैं। आज उनकी शोचनीय स्थिति चरम सीमा तक पहुँच गयी है। रचनाकार का दायित्व इन्हें आगे की ओर बढ़ाने का संदेश देता है। वे साहसी होकर कहते हैं-

"मैं तुम्हारे साथ हूँ
तुम्हारी पुकार की ऊँगलियाँ थाम कर
चलता चला जाऊगा
तुम्हारे पीछे-पीछे
अपने पिछले अंधकारों को पार करता।"[2]

कवि यहाँ जिस अंधकार की बात कर रहे हैं, वह हमारी आँखों से देखनेवाला अंधेरा नहीं वह स्वार्थी लोगों और सत्ताधारी लोगों के दमन और व्यवस्था रूपी अंधकार है। उपर्युक्त कविता में अंधकार के मार्ग पर कवि मशाल लेकर कारीगर (श्रमिक) को राह दिखाकर आग की ओर की ओर बढ रहे हैं।

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - सुराही - पृ. 45
2. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - पृ. 36

2.1.5 किसान

भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारी संस्कृति में कृषि का बोलबाला है। इसलिए किसानों को हमने कोई जाति के अंतर्गत नहीं रखा। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार - "....यद्यपि विभिन्न पेशा के आधार पर जाति के गठन की सामाजिक जाति व्यवस्था रही है लेकिन किसानी जैसे महत्वपूर्ण काम को किसी एक जाति से नहीं जोडा गया है।"[1] किसानी को उच्च स्तर देनेवाली सामाजिक व्यवस्था से किसान दूर होकर खडे होते हैं। विकास के परिणाम स्वरूप खेत अदृश्य हो गया है। किसानों की ज़िंदगी भी दुःखद है। उदय जी किसानों की समस्याओं को भी बाहर लाने का प्रयत्न अपनी रचनाओं के ज़रिए करते हैं। 'सरकार' नामक कविता में किसानों की समस्याओं का खुलासा है। उनकी समस्याओं को आवाज़ देते हुए कहते हैं-

"दुक्खन बहुने कहा....
सरकार लगान के बावत
फरिदाय है
कि बारिश नहीं हुई
धरती झुरा गई
खेत फट गये
गाँछो के पात
खड-खड बजने लगे

---

1. प्रफुल्ल कोल्ख्यान - साहित्य, समाज और जनतंत्र - पृ. 179

कुठिला में दाना भी नहीं
जो था सो हमने खा लिया
जब खा ही लिया
x x x
तो खेत में छीटते क्या
सो लगान के बावत
फरियाद है.....
x x x
फिर चारों चार कन्ठ से
एक स्वर में बोले-
हम सरकार है।"[1]

धरती, खेत, प्रकृति एवं सत्ता से वंचित होकर किसान लोग परेशानी से बचाने के लिए उपाय की सोच में हैं। उपाय तो न मिलने के कारण वे अपने में सीमित होकर जीवन बिताते हैं। उदय प्रकाश 'दुक्खन' को प्रतीक मानकर किसानों की इस दुर्दशा पर चिंतित हैं-

"दुक्खन तुम्हारे डर से
चार महीना जंगल में लुका रहा
फिर जाने कौन-सा
सरकारी बाध उसे खा गया...."[2]

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - सरकार - पृ. 39
2. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - पृ. 45

सरकार (व्यवस्था) दुक्खन के पीछे आज भी मौजूद है दुक्खन और बहु दोनों, दलाल और सरकार के भ्रष्टाचार को समझनेवाले किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि दुक्खन बहु भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाली आधुनिक नारी है। दुक्खन बहु सरकार से कहती है-

"जो सरकार हो तो
रियाया का दुःख समझो
बारिश करो
खेत में फसला पैदा करो
ये तुम कौन-से सरकार हो जी
राच्छस की तरह आते हो
तबाही मचते हो
सब समट - बटोर कर ले जाते हो।"[1]

भूमिविहीन किसान पीडाओं का सामना किस प्रकार करता है, और मज़बूरी वश ज़मीन्दारों की सेवा किस प्रकार करता है उसी का चित्रण 'हीरालाल का भूत' कहानी में हम देख सकते हैं। हीरालाल के पिता सुधन्ना हरपाल सिंह के खेत में काम करनेवाला किसान था। कई वर्षों से काम करके-करके वह बीमार हो गया। सुधन्ना बीमार के चार दिन तक खेत की निगाई में जाता रहा। पाँचवें दिन सबेरे ज्वर आया था। ठाकुर का जकीडेदार लल्लापंडित सुबह काम के लिए उसे बुलाने आया था तो वह आँगन में अँगोछा में मुँह ढापकर पडा हुआ था। लल्लापंडित

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - सरकार - पृ. 39

ने कहा - "साला जाँगरचोर, दिक बीमारी का बहाना बनाकर यहाँ ऐश कर रहा है और अपनी जवान बहु से औरतें लड रहा है।"[1] सुधन्ना यह सुनकर कुछ नहीं बोला। वह वैसे ही पड रहा। न हिला न डुला। यह देखकर लल्ला पंडित को गुस्सा आया। लल्ला पंडित गाली बकी और डंडे से उसे कोंचा, तो भी वैसे ही काठ के लट्ठ की तरह पडा रहा। इस अमानवीय प्रवृत्तियों के विरुद्ध सुधन्ना की बहु ने आवाज उठायी। वह कहती है - "रहने दो पंडितजी, बडा तेज जर चढ़ा है इन्हें।"[2] फुलिया आधुनिक नारी का प्रतिनिधि है। फुलिया के कथन सुनकर लल्ला पंडित ने क्रुद्ध होकर कहा - "ठाकुर का खेत कौन निरायेगा, ससुरी! चल तू ही चल उसकी जगह। कल जब आज के लिए सेर - भर खवाई माँग लाया था, तब इसने नहीं सोचा कि आज इसका जांगर नहीं चलेगा।"[3] फुलिया यह सुनकर अपने ससुर की जगह ठाकूर के खेत की निराई में चली गयी। और उस दिन सुधन्ना की मृत्यु हुई। उदय जी के मन में किसानी लोगों के प्रति लगाव है। इसलिए वे कहते हैं - "गाँव की रस्म के मुताबिक ठाकुर हरपाल सिंह, पंडित मलखान चौधरी जैसे कुछ बडे घरों को छोडकर किसी के घर में चूल्हा नहीं जलाया।"[4] पिता की मृत्यु के उपरान्त हीरालाल को हरपाल सिंह के घर का सारा काम करना पडा। सुधन्ना खेत का काम मात्र करता था, इसका कारण यह था सुधन्ना के पट्टे में डेढ एकड जमीन थी। हीरालाल ने इस जमीन के बारे में पूछा तो ठाकुर हरपाल सिंह ने कहा दिया था कि

---

1. उदय प्रकाश - तिरिछ - हिरालाल का भूत - पृ. 126
2. वही - पृ. 126
3. वही - पृ. 126
4. वही - पृ. 126

वह ज़मीन उसका बाप पहले ही उन्हें बेच गया था। अब हीरालाल के पास कुछ नहीं बचा था। उसका खपरैल-फूस का घर भी कानूनी तौर पर हरपाल सिंह की ही ज़मीन में था। हीरालाल शोषित वर्ग का प्रतिनिधि है। इसलिए वह सिर्फ सुनता था। बोलता नहीं था। उदय जी शिक्षा की प्रधानता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर लेते हैं। हीरालाल शिक्षित होते तो अपनी भूमि के लिए अदालत में जाकर लडेगा। लेकिन वह कुछ भी नहीं करता। यह कहानी केवल किसानों की विवशता की कहानी मात्र नहीं, किसानों को अपने अधिकार के प्रति सोचने के लिए मज़बूर करनेवाली कहानी है। उदय प्रकाश जी किसानों के सभी प्रकार के अभावों को सामने रखते हुए यह प्रमाणित करना चाहते हैं कि ऐसी स्थिति में उनका सुधार कठिन है।

भूमंडलीय समय में किसानों की दुविधा पूर्ण जीवन का जिक्र करने के साथ ये सामंती व्यवस्था के प्रति विद्रोह करते हैं। मैं उनका सुधार कठिन है। 'मालिक आप नाहक नाराज है' कविता के ज़रिये भूमंडलीय सामंती जंजीरों को तोडने का आह्वान कवि यों देते हैं-

"आप तो फिर क्या है मालिक
फूस की तरह उडेंगे अन्धड में
पटकनी खाऐंगे खपरैलों में
बे पर्द अलग हो जाएँगे
और नीचे धरती पर
इत्ते-सारे इत्ते सारे रंग

सब के सब
आपका मज़ाक बनाएँगे।"[1]

किसान लोगों को फिर अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाना चाहिए। खेती-बारी के लिए उनको भूमि प्रदान करना चाहिए। वास्तव में किसान लोग ही पृथ्वी को उर्वर बनाते हैं।

2.1.6 स्थानीय कवि

"इस पत्थर के भीतर
एक देवता जरूर है
उस देवता के मंत्र से
यह पत्थर है
जैसे हम सब
पत्थर है किसी देवता के मंत्र से।"[1]

इस तरह अपने आपका पहचानने की शक्ति देनेवाले कवियों की स्थिति भूमंडलीय समाज में दर्दनाक है। अनेक रचनाकारों की हत्या यहाँ हो रही है। रचनाकारों ने क्या किया? यह भी चिंता का विषय है। उन्होंने अपनी जनता को ताकत दी, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया और देश की अखंडता पर विचार किया। फिर भी कल्बुर्गी, गोविन्द पसारे जैसे जो रचनाकार है वे सत्ता के दमन के शिकार बने हैं। अनेक रचनाकारों ने आत्महत्याएं की हैं। उदय जी ने

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - मालिक आप नाहक नाराज है - पृ. 45
2. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - पत्थर - पृ. 13

स्पष्ट रूप से इस पर टिप्पणी की है - "पिछले पाँच सालों में हिन्दी भाषा में उनके जैसे ही लगभग डेढ-दो दर्जन कवियों - लेखकों ने कीटाणुनाशक द्रव पीकर या सीलिंग हुक में रस्सी से फंदा लगाकर आत्महत्यायें कर डाली थीं। कुछ को अज्ञात लोगों ने मार डाला था।"[1] समकालीन संदर्भ में ये सारी प्रवृत्तियाँ बढती जा रही हैं। इन सबको अपनी आँखों से देखकर उदय प्रकाश 'मोहदास' (2010) के लिए मिला। साहित्य अकादमी पुरस्कार वापस दिया। इस प्रतिरोधी चेतना से प्रेरित होकर केरल के सारा जोसफ, सच्चिदानंदन और सक्करिया जैसे लेखकों ने अपनी प्रतिक्रिया जाहिर की। भूमंडलीय समाज में कवि भी हाशिए पर छोडा गया समूह है। क्योंकि उनके सामने वे अच्छे उत्पादक तो नहीं बन सकते हैं। कवियों की ज़िंदगी में हताश एवं निराशा का भाव मात्र है। अपने बच्चे को सामान्य सी पढ़ाई एवं साधारण भोजन के बिना और कुछ नहीं दे सकते। अन्य जरूरतों की पूर्ति के लिए पैसों की ताकत होनी चाहिए। ये उनके पास नहीं होते। इस विवशता के तहत उदय प्रकाश कहते हैं-

"मेरी जलती हथेलियाँ
तीन साल के नर्म-भूरे सिर पर
सिर के मुलायम बालों पर
घूमती है
सामान्यतया ऐसा होता है
कि इस समय मैं कहना चाहता हूँ
कि ओ तीन साल के नन्हें से सिर
मैं तुम्हें एक हलकी थपकी के सिवा

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 34

एक चालू सी पढाई
सादे से खाने के सिवा
और कुछ नहीं दे सकता
ओ, तीन साल की नन्हीं इच्छाओं
तुम्हारी उडाने के लिए
तुम्हें पंख तक नहीं
एक बिलकुल खाली और
शाँत आकाश भी नहीं।"[1]

कवि की स्थिति आज चिंता का विषय बन गयी है। उदय प्रकाश विवादों से घेरे हुए रचनाकार हैं। इसका कारण यह है कि वे हर सच को ईमानदारी के साथ पाठकों के सामने पेश करते हैं। जब उनकी कोई रचना प्रकाशित होती तब विवाद की शुरुआत भी होती है। कुछ बुद्धि जीवि माननेवाले लोग उनके विपक्ष में खडे हैं। पाठकों के मन में वे जीवित हैं। यहाँ के पाठक मात्र नहीं फ्रेंच, पाकिस्तान जैसे विदेश के लोग भी हैं उनके साथ। पाकिस्तान की पत्रिका 'आज' के संपादक अजमल कमाल कहते हैं - "पाकिस्तान में वैसे तो सब कुछ है मगर यहाँ कोई उदय प्रकाश नहीं।"[2] भारत में वे संघर्ष में ही जी रहे हैं। उनकी 'कविता' शीर्षक कविता में उनके द्वारा झेली हुई संघर्ष गाथा है-

"कट तो रहे थे
दुख-सुख के दिन
चुप-चुप।

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - सामान्यतया ऐसा होता है - पृ. 21
2. शीतलवाणी - आगस्त-अक्तूबर - भूमिका

चुप-चुप।
गयी साँझ बारिश की
जैसे हलकी बूँदें।
चुप-चुप।
चैत जेठ के
लंबे-लंबे पाँवों वाले
बूढे बाबा की दाढी जैसे
मैले-उजले
उलझे बूढे दिन
भूखी-प्यासी
नींद-गर्द से भरी देह
यह
सूना पिजरा।
इतना सूना
निदियाँ-जंगल सब पत्थर के
ढेले-माटी
पेड-पहाड
पूल-तितलियाँ
सब पत्थर के।
सब पत्थर के।
पत्थर के सब रिश्ते-नाते
पत्थर के सब।
कविता से पहले
यह सब कुछ

बीत रहा था
जैसे-तैसे
कहते-सुनते।
x x x
लेकिन कविता के आते ही
सब-कुछ
व्याकुल
और अशांत।"[1]

उनकी विवशता 'किताब' नामक कविता में भी बुलंद है। अपने को एक साधारण मनुष्य साबित करते हुए कहते हैं-

"....इस एक्वीरियम में तैरती मछली से
यकीन करो, मैं एक मनुष्य हूँ।"[2]

उदय प्रकाश अपने को न माननेवालों से कोई प्रतिरोध तो नहीं करते। वे आज भी कविताएं लिख रहे हैं। क्योंकि कविताओं के तहत वे सहानुभूति पैदा करने के लिए कहते हैं-

"पैदा करो सहानुभूति
कि मैं अब भी हँसता दिखता हूँ
अब भी लिखता हूँ कविताएँ।"[3]

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - कविता - पृ. 34-35
2. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - किताब - पृ. 27
3. वही - पृ. 41

आज व्यापारी संस्कृति है। इस में कला और साहित्य का स्रोत सूख जाता है। इस पर चिंता करने की जरूरत है। क्योंकि जो युग-युग से व्यक्ति और समुदाय की पारस्परिकता और उनकी आपसी सम्प्रेषणीयता का जनक और पोषक रहा है। मुनाफा कमाने की वजह से कलाकार की भावना समुदाय की भावना से भिन्न हो गयी है। फलस्वरूप साहित्य का अवमूल्य हुआ। विज्ञापन के कोलाहल में प्रेमचन्द, तालस्ताय, गाँधी और टागोर का नाम तक भूल गया। बिल्ग्रेट्स, अम्बानी और करोडपतियों का नाम दिमाग में है। उदय जी हमें अवगत कराते हैं कि औपनिवेशिक संस्कृति में किसी को कला के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं होगी। "लोग प्रेमचन्द-तालस्ताय, गाँधी या टैगोर का नाम तक भूलने लगे। किताबों की दूकानों में सबसे ज्यादा बिक रही थी बिल्गेट्स की किताब 'द रोड अहेड'।"[1] साहित्यकारों एवं कलाकारों को उपाधि देकर आदर सम्मान करना भी हमारी छद्म संस्कृति का भाग बन गया है। जो योग्य है उनकी अस्वीकृति होती है। ये साहित्यकार एवं कलाविद भी कई कंपनियों के उस्ताद बनकर विदेश जाते हैं। पद्मभूषण, और पद्मश्री आदि से अलंकृत हो जाते हैं। स्थानीय कविगण आज परेशानी पर है। क्योंकि उनकी अस्मिता दुनिया में नष्ट हो रही है। 'अर्जी' नामक कविता में इस परेशानी का चित्रण व्यक्त करते हैं-

"मेरे जैसे लोग दरअसल संग्रहालय के लायक भी नहीं है
कोई क्या करेगा आखिर ऐसी वस्तु रखकर
जो वर्तमान में भी बहुतायत में पायी जाती है।"[2]

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 12
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - पृ. 14

यहाँ की कविताओं में समस्याओं को प्रतिबिंबित करने की ताकत है। ये ताकत प्रखर परंपराओं के उजाला से मिला है, यह तो नष्ट हो रही है।

2.1.7 भाषा

संस्कृति हमारी ऊर्जा है। आज यह ऊर्जा विभिन्न रूपों में हमसे दूर हो रही हैं। उपनिवेश अपने प्रभाव को तीसरी दुनिया पर थोपने के लिए पहले वहाँ की संस्कृति को छिन्न-भिन्न करता है। डॉ. एन. मोहनन के अनुसार - "बडी सभ्यता को निस्तेज करने का सबसे आसान तरीका है उसे अपनी संस्कृति से उखाडना।"[1] भूमंडलीय दौर में जहाँ हमारे जीवन से संबन्धित भौतिक उत्पादनों के साथ हमारे आन्तरिक पहलुओं का भी विनाश हो रहा है। यह तो सबसे बडी खतरनाक स्थिति है। आज व्यक्ति को अपने देश की चीज़ों की तुलना में विदेशी चीज़ें अधिक आकर्षित रही हैं। चाहे खान-पान की हो, पहरावे की हो या फिर भाषा की हो। इस सांस्कृतिक संकट के बीच भी उदय प्रकाश अपनी भाषा के प्रति चिंतित है। उनके अनुसार - "वह भाषा जिसमें मैं बोलता हूँ, सोचता हूँ, लिखता हूँ वह किसके अधीन है?"[2] उनकी कविताओं में गायब होनेवाली भाषा के प्रति चिंता है। देखिए-

"एक भाषा है जिसे बोलते वैज्ञानिक और
समाजविद और तीसरे दर्ज के जोकर
और हमारे समय की सम्मानित वेश्याएँ और क्रान्तिकारी

---

1. डॉ. एन. मोहनन - समकालीन हिन्दी उपन्यास - पृ. 45
2. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लड़की - पृ. 98

सब शरमाते हैं
जिसके व्याकरण और हिपो की भयावह भूल ही
कुलसील वर्ग और नस्ल की श्रेष्ठता प्रामाणित करती है।"

विदेशी भाषा सीखना बुरी बात नहीं। लेकिन अपनी भाषा और सभ्यता को खो देना अत्यन्त बुरी बात है। अपनी भाषा अपनी पहचान है। उदय जी इस पीडा को महसूस करते हैं कि अपनी भाषा आज भी वहाँ पहुँची नहीं जहाँ दूसरी भाषाएँ पहुँची है।

दुनिया भर की भाषाओं पर युनेस्को एटलस के सर्वेक्षण के मुताबिक कुल छह हजार मे से 2500 भाषाएँ खतरे में है जिनमें सर्वाधिक 196 भारत, 192 अमेरिका और 147 इंडोनिशिया में है। धीरे-धीरे खत्म हो रही ढाई हज़ार भाषाओं में से 200 ऐसी है जिन्हें 10 से भी कम लोग बोलते हैं जबकि 178 भाषाएँ जाननेवालों की संख्या 10 से 50 के बीच है। 200 भाषाएँ ऐसी है जो महज पिछली तीन सीढियों के दौरान खत्म हो गई। कवि भाषा की गायब होनेवाली इस स्थिति की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं-

"हम स्वप्न में डरे हुए देखते हैं टूटते उल्कापीडा की तरह
उस भाषा के अतरीक्ष से
लुप्त होते चले जाते हैं एक एक कर सारे नक्षत्र
भाषा जिसमें सिर्फ कूल्हे मटकान
और स्त्रियों को
अपनी छाती हिलाने की छूट है
जिसमें दंडनीय है विज्ञान और अर्थशास्त्र और

शासन से संबन्धित विमर्श
प्रतिबन्धित है जिसमें ज्ञान और सूचना की प्रणालियाँ
वर्जित है विचार।"[1]

मनुष्य अपनी भाषा के ज़रिये विचार को प्रकट करता है। लेकिन आज हमारी भाषा गायब हो रही है। उदय जी कहते हैं कि जिस प्रकार उल्का की पीडा से नक्षत्र अप्रत्यक्ष होते हैं उसी प्रकार भूमंडलीय प्रभाव से अनेक भाषाएँ नष्ट हो रही हैं। उदय जी भाषा की हर एक इकाई के प्रति भी चिंतित है। उपनिवेशी सभ्यता ध्वनियों को भी छीनने की कोशिश कर रही है। इस खुलासा यों करते हैं-

"हम से हमारी ही भाषा छीनने के लिए मत दौडाओ अपने
कुत्ते हमारी ओर
चाहें तो बदले में हम अपने गुर्दों या अपनी औरतें
आपको दे सकते हैं
इतना संयम और इतनी मर्यादा तो हर सभ्यता में होनी ही
चाहिए है कि नहीं?"[2]

हमने मृत्यु भय और जीवित रह पाने के आश्चर्य एवं उल्लास में लिखियों को रचा है। इसलिए ये शब्द, लिपि सब हमारे हैं। उदय जी आवाज़ उठाकर बोलते - "इनसे ऐसा काम मत लो ताकतेंवर"[3] उदय जी की साहसी आवाज़ यहाँ बुलंद है। खुलकर बताना उनकी शैली है।

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - पृ. 92-93
2. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - पंटन पुल - पृ. 71
3. वही - पृ. 71

गायब होनेवाली भाषा के प्रति उनकी चिंता सराहनीय है। क्योंकि भारतीय लोगों के मन में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति लगाव है। इस लगाव के कारण भारतीय विदेशी भाषा पढते हैं, विदेशों में काम करने के लिए जाते हैं और उनके संस्कारों को अपनाते हैं। उदय जी ने उपनिवेशी सभ्यता के पीछे दौडनेवाले भारतीयों का चित्रण भी अपनी कहानियों के ज़रिये किया है। उसमें पीली छतरीवाली लडकी, दिल्ली की दीवार (Walls of Delhi) आदि उल्लेखनीय है। 'दिल्ली की दीवार' में पाश्चात्य सभ्यता के प्रति ममता रखकर अपने बच्चों को भी उसकी ओर मोह जगानेवाले रामनिवास की कहानी है। वह 'काले धन' को छुराकर एक मिनिट में करोडपति बन जाता है। परंपरागत मूल्यों पर वे थूकते हैं। रामनिवास की प्रवृत्तियाँ पाश्चात्यों जैसा बन गयीं। ध्यान देने की बात यह है कि पैसा है तो विदेशी सभ्यता का अनुकरण करने के लिए वह विवश बन जाता है। रामनिवास अपने बच्चों के साथ सुखमय जीवन बिताने के साथ ही साथ दूसरी स्त्री के साथ संबन्ध रखता है। वे दोनों दिल्ली के फैल स्टार होटल में रहते हैं, शराब पीते हैं और यौन संबन्ध स्थापित करते हैं। रामनिवास पूर्ण रूप से पाश्चात्य बन गया। अपने घर में हम विदेश निर्मित सीडी प्लेयर, टी.वी खरीदते हैं। रामनिवास हर माँ-बाप की तरह अपने बच्चों के प्रति चिंतित है। लेकिन उनकी चिंता अपने बच्चे को अमेरिका भेजने के लिए है। उदय प्रकाश इसका खुलासा यों करते हैं - "जल्दी ही बच्चों के लिए कंप्यूटर खरीद लाएगा। आज के ज़माने में कंप्यूटर सीखे बिना कोई तरक्की नहीं कर सकता। ऊर्मिला और रोहन दोनों को अमेरिका भेजेगा, जहाँ वे किसी

कम्पनी में काम करेंगे और हर महीने कई लाख की तन्ख्वाह पाएँगे।"[1] परंपराओं पर थूकते हुए पाश्चात्य सभ्यता के पीछे, दौडकर, अमेरिका, कैनडा एवं जर्मनी जैसे विदेसी राज्यों में अपने बच्चों को भेजवाली युवापीढि के पिता का प्रतिनिधि है रामनिवास। रामनिवास 'काला धन' के छुराने के कारण किसी के हाथ से उनकी हत्या हुई। उनकी इच्छा की पूर्ति नहीं हुई।

उदय जी की चर्चित कहानी 'पीली छतरीवाली लडकी' में नायक राहुल ने बी.एस.सी केमिस्ट्री पास करने के बाद एम.एम. में हिन्दी चुन ली। कई मित्रों ने हिन्दी से उनका लगाव मिटाना चाहा। लेकिन उन्होंने एम.ए हिन्दी पढ़ना शुरू किया। राहुल का एक मित्र अयरलंड जाने की तैयारी में है, जाने के पहले भी राहुल से उनका कहना है - "राहुल मेरी बात को सीरयसली ले। दस दिन बाद मैं चला जाऊँगा.... तू इस गटर से निकल ले। मैंने शुरू से ही तुझे वर्ता किया था। सारा डेटा दिये थे, इस दिन में न तुझे जोब मिलेगा न तू इसमें कोई आथर बनेगा... तू एक निओ सेमेटिक आइडियलिस्ट सिपलटन है - राजकपूर और गुरुदत्त की बचा हुआ सेटेमेटल जोकर।"[2]

उदय प्रकाश ने भारतीय होने पर भी राष्ट्रभाषा के प्रति कोई दिलचस्पी न रखनेवाली युवापीढी का चित्रण किया है। लेकिन उदय प्रकाश राहुल के माध्यम से अपनी राय व्यक्त करते हैं - "मैं इसी में रहूँगा इसी में लडूँगा और इसी में मार दिया

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख - दिल्ली के दीवार - पृ. 97
2. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 135

जाएगा।"[1] अपनी रचनाओं के ज़रिए पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के अनुकरण में फँसे उपनिवेशवादी मानसिकता उदय जी ने दिखाया है।

2.2 नवऔपनिवेशिक स्थितियाँ

नवउपनिवेश वैश्वीकरण द्वारा फैलाया गया मायाजाल है। जिससे हमारा देश नई गुलामी की ओर बढ रहा है। इस गुलामी को बढावा देने में नवउपनिवेश के खतरनाक तत्वों की भूमिका बडी है। इन खतरनाक तत्वों में उपभोग संस्कृति, ब्रांड संस्कृति, विज्ञापन, बाजारु संस्कृति आदि प्रमुख हैं।

उदय प्रकाश की रचनाओं में इन सबके प्रतिरोध के ज्वलंद उदाहरण प्राप्त हैं।

2.2.1 उपभोक्तावाद : भूमंडलीकरण की संस्कृति

हर मानव के सोच-विचार, धर्म-चेतना, कला-चेतना साहित्य चेतना, रहन-सहन सब कुछ संस्कृति पर निर्भर होते हैं। अर्थात हर मानव के जीवन की पूर्ण इकाई है संस्कृति। संस्कृति का सुस्पष्ट एवं सुगम्य रूप में समझाते हुए आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है - "किस देश या काल के सर्वोत्तम चिंतन-मनन को ही मैं उस देश या काल की संस्कृति कहता हूँ। भारत वर्ष ने अपने विशाल इतिहास के दौरान बहुत कुछ सोचा है, अच्छा भी, कम अच्छा भी और कभी कभी गलत भी। सबके मूर्त रूप की गणन मैं 'संस्कृति' में नहीं करता। मैं उनको ही भारतीय संस्कृति में गिनता हूँ जो सर्वोत्तम है। अर्थात मनुष्य को पशु-सुलभ

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 126

धरातल से अधिक से अधिक दृढतापूर्वक बैठाने में वह समर्थ है। जो बातें मनुष्य को जडता की ओर ले जानेवाली हैं, उन्हें मैं संस्कृति का प्रतिपंथी मानता हूँ। यानी बाजारु संस्कृति एवं उपभोक्ता संस्कृति वास्तव में लाभ-लोभ की संस्कृति हैं। ये दोनों संस्कृति के प्रतिपंथी हैं।

आज मनुष्य ऐसे समाज में जी रहा है, वहाँ भोगवादी प्रवृत्तियाँ बढती जा रही है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उपभोग के बिना जीवन संभव नहीं है। इसके पीछे तानाशाही रूपी बाज़ारवाद की शक्तियाँ मौजूद हैं। फ्रांकफर्ट के प्रमुख चिंतक थियोडोर अडोर्नो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति उद्योग' में संस्कृति में घुलती तात्कालिकता और उपभोक्ता प्रवृत्ति की ओर इशारा करते हुए लिखा है - "संस्कृति की विशुद्ध तात्कालिकता नहीं होती, जहाँ कहीं वह जनता को उपभोक्ता की तरह मनमाने ढंग से अपने उपयोग की छूट देती है, वहाँ वह जनता के साथ छल करती है.... बाजार का नियंत्रण आज निस्संकोच ढंग से संस्कृति में सडांध भर रहा है।"[1] इस तरह देखा जाये तो हम समझ सकते हैं कि बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद भूमंडलीय संस्कृति के उपकरण है।

वस्तु का उपभोग तो पहले से ही चल रही है। लेकिन उस समय उपभोगी वस्तुओं के साथ देश प्रेम एवं उपयोगिता के बारे में हम सोचते थे। आज बाजारु संस्कृति ने हमारे सोचने एवं समझने की शक्ति खत्म कर दिया। हर मल्टी नाशनल कंपनी अपने उत्पादन के लिए इससे अच्छा और सस्ता कहीं नहीं जैसे दावे और

---

1. अनभै सांचा - संयुक्तांक 2014 - पृ. 32

वादे पेश करती नज़र आ रही हैं। इस पर मुग्ध होकर हमारा घर बाजार में तब्दील हुआ। वहाँ देशी उत्पन्न साधनों के स्थान पर किसी ब्रांड एवं अनावश्यक साधनों की भरमार है। इसके तहत पारम्परिक सम्बन्ध टूटता हैं। शंभुनाथ का विचार देखिए - "उपभोक्ता, उपभोक्ता वस्तुओं और अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति का पारम्परिक संबन्ध टूटता ही उपभोक्तावाद है।"[1] अर्थात् सब कहीं अपसंस्कृति फैल रही है।

2.2.2 उपभोक्तावाद : कुछ परिभाषाएँ

'उपभोक्तावाद' का प्रयोग सबसे पहले 1915ई में हुआ। उस समय इसका अर्थ उपभोक्ता को अपने अधिकारों एवं रुचियों के प्रति सजग बनाना। आज के रूप में उपभोक्तावाद का प्रयोग 1960 में हुआ था।

उपभोक्तावाद का अर्थ है "उपभोग को केन्द्र में होना अर्थात किसी अर्थ व्यवस्था में उत्पादन और वितरण के बरक्स उपभोग को असीमित प्राथमिकता देना।"[2] इससे पता चलता है कि रोटी, कपडा, मकान, शिक्षा एवं दावा जैसी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक उपभोग सीमित नहीं बल्कि आरामदायक वस्तुओं को भी प्राथमिकता में लेना चाहिए।

उपभोग की सैद्धान्तिकी उपभोक्तावाद मूलतः पूँजीवाद की सैद्धान्तिकी है।"[3] अर्थात पूँजी ने हमारी कामना के क्षेत्र में कब्जा किया और हमारे स्वत्व पर

---

1. शंभुनाथ - संस्कृति की उत्तर कथा - पृ. 158
2. वागर्थ - जून 2000 - पृ. 78
3. सुधीश पचौरी - ब्रेक के बाद - पृ. 125

अधिकार जमाया। प्रो. दुर्गाप्रसाद गुप्त हमारी संस्कृति की दुर्दशा की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं कि यद्यपि हम राजनीतिक उपनिवेशवाद से मुक्त हो चुके हैं, पर एक दूसरी किस्म के उपनिवेशवाद में फँसी हमारी संस्कृति छटपटा रही है। यह नयी उपभोक्ता संस्कृति हमारे मस्तिष्क को भी कब्जे में कर लेती है। इसलिए हम स्वदेशी चीजों को फेंककर विदेशी उत्पादनों को खरीदकर आधुनिक बनने की चेष्टा करते हैं।

भूमंडलीकरण का सबसे खतरनाक औजार है उपभोक्तावाद क्योंकि आरामदायी उत्पादनों के ज़रिए वे ग्राहक का ध्यान आकर्षित करते हैं। इसीसे वे उपभोक्ता बनते हैं। बौद्रिका का कहना है कि उपभोक्ता समाज में पहुँचकर पूँजीवाद का नया युग शुरू हो गया है। इस युग में उत्पादन पद्धति उपभोग के विस्तार पर निर्भर हो गई है, वह उपभोग के पुनरुत्पादन पर निर्भर हो गई। यही पूँजीवाद का उपभोक्ता युग है। साम्राज्यवादियों ने कायबल के स्थान पर उपभोग वस्तु देकर हमें आतंकित किया है।

"उपभोक्तावाद मूलतः एक ऐसा मंत्र है जो चिह्नों को नियमित करता है। और जो एक समूह को चिह्न से जोडता है, बाँधता है एक निश्चित संचार प्रक्रिया से जोडते हैं और एक विनिमय प्रणाली से जोडता है। यह जटिल प्रक्रिया व्यक्ति के जीवन को जबर्दस्त ढंग से बदल देती है। वह उन्हें अवचेतनावस्था में पकड लेता है।"[1]

---

1. सचेतना - सितम्बर 1994 (सयुक्तांक) - पृ. 30

तेजी से भागती ज़िंदगी में रोटी का तर्क तो नहीं बर्गर खाओ, ब्रेड खाओ, पानी नहीं पेप्सी पियो आदि का बोलबाला है। अर्थात हमारी अस्मिता, नैतिकता एवं संवेदनाओं को यहाँ स्थान नहीं। अपसंस्कृति का मंत्र है अधिक से अधिक वस्तुओं का उपभोग करना। उपभोग के लिए बाजार की वस्तुएँ कैसे अपनायी? इसका कोई महत्व नहीं। आप चोरी करते हैं, डाका डालते हैं, अपहरण करके संपत्ति वसूल करते हैं, रिश्वत लेते हैं, तस्करी करते हैं - इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं होगा। सभी का ध्यान अपनी शानशैकत की ओर, विलासिता एवं समग्रता की ओर है। ये समाज हमें 'Use and throw'"[1] इस फेंकनेवाली संस्कृति से अमानवीयता का जन्म हुआ। शंभुनाथ का विचार इस अवसर पर समीचीन होगा। उनका कहना है - "उपभोक्तावादी समाज में हर आदमी किसी को छल रहा है और कहीं खुद भी छला रही है। इस समय लूटे नहीं तो लूट लिए जाओगे का भारी अमानवीय दबात है।"[2]

उपभोक्तवाद से उत्पन्न समस्याओं का सरल समाधान नहीं। लेकिन कालिदास ने कहा है कि हर नई चीज़ अच्छी नहीं होती और हर पुरानी चीज़ खराब नहीं होती, विवेकशील व्यक्ति अपने विवेक से दोनों में से सही और उपयोगी चीज़ चुनता है। उपभोक्तवाद के इस समय में कालिदास की इस विचार पर चर्चा करने की जरूरत है। क्योंकि उपभोक्तवाद से उच्चवर्ग पर असर नहीं पडता मध्यवर्ग आगे की चिंता में है, लेकिन आम आदमी आधुनिक बनने की चेष्टा में अपसंस्कृति में पिसते रहते हैं।

---

1. सुधीश पचौरी - साइबर स्पेस और मीडिया - पृ. 86
2. शंभुनाथ - संस्कृति की उत्तर कथा - पृ. 16

2.2.3 वस्तु में तब्दील होती स्त्री

अपसंस्कृति का एक ओर पक्ष नारी देह से जुडा हुआ है। वह आज के सबसे बडी भोग की वस्तु बन गयी। उदय प्रकाश की रचनाओं में स्त्री का उपभोगी रूप प्रकट है।

आज सभी क्षेत्रों में स्त्री उपभोग की वस्तु में बदल गई हैं। छोटे-छोटे क्लासों से लेकर विश्वविद्यालय, बैंक, अस्पताल और आइटी फील्ड सब कहीं यही रीति चल रही है। उदय प्रकाश अपनी कहानी 'पीली छतरीवाली लडकी' में एक डॉक्टर के ज़रिये भोगवादी दृष्टि को दिखाता है। राहुल (नायक) को विश्वविद्यालय से कुछ लोकल गुंडों के हाथों से चोट लगी। इलाज के लिए डॉ. चतुर्वेदी के पास जाता है। इलाज के साथ राहुल के मन में भी भोग की आकांक्षा को बढाते हैं। कहानी के अंत में वह अपनी प्रेमिका अंजली का खूब भोग करके आकांक्षा की पूर्ति करता है। डॉ. चतुर्वेदी की नज़रिया देखिए - "कहाँ से आए है आप जनाब?.... आज कल लडकियाँ ऐसी स्टाइल पसंद करती है क्या?.... देखो मिस्टर अगर लडकियों से दोस्ती का इतना ही शौक है तो ज़रा अपनी पाकेट भारी करो, कार में चलो, पैदल क्यों खुले में घूमते हो इनके साथ, इतनी सारी कारें आती हैं सिटी से इस कैंपस में, उन टिटेड ग्लास के भीतर क्या क्या होता है, क्या हमें पता नहीं अरे, इतने सारे होटल हैं वहाँ जाओ इस तरह घूमेगा तो खतरा तुम्हें नहीं, इन लडकियों को हैं, यहाँ का एटमोसिफयर ठीक नहीं, दीवारों पर ऊटपटांग बातें लिख

दी जाएँगी तुम्हारा वदनाम होकर तो कुवारी बेचारी ये बैठोगी न।"[1] यही है आज का समाज। स्त्री को भोगने की वस्तु का रूप युवापीठी को देनेवाला पुरुष समाज का प्रतिथि है डॉ. चतुर्वेदी। वह तो समाज में बडे ओहदे में बैठनेवाला है। फिर भी स्त्रियों के प्रति उनकी नज़रिया उदय प्रकाश ने अत्यन्त रोचक तरीके से किया है।

समकालीन समाज में स्त्री ने समझ लिया कि स्त्री को अपनी देह पर पूरा अधिकार है। उसकी इच्छानुसार अपनी देह का उपयोग किया जा सकता है। स्त्री उपभोक्ता समाज में प्रदर्शन की वस्तु होकर बाज़ार में प्रस्तुत करने का योग्य माल मात्र है। उदय प्रकाश अपनी कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में शेविंग ब्लेड और बियर जैसे पुरुष उपयोगी प्रोडक्ट्स के विज्ञापन हेतु स्त्री का उपभोग बाज़ार अपने फायदा के लिए किस प्रकार कर रहा है इसका खुलासा है। आस्पताल के सफाई कर्मचारी की बेटी सुनीला रात मालामाल हो गयी थी। फिर वह टी.वी के विज्ञापन में आठ फूट विशाल ब्लेड के मॉडल पर नंगी सो गई थी। बिहार की प्रैमरी स्कूल टीचर आशा मिश्र नौकरी छोडकर अपने प्रेमी के साथ दिल्ली आ गई थी, एक विज्ञापन में बलिष्ट काले रंग के अरब घोडे की खुरदरी पीठ पर बैठकर अपने पारभासक जंघिए के भीतर से यानी अंडरवियर से 'ब्लाक होर्सा' नामक बियर की बोतल निकाल कर अपनी छातियों में उडेल देती है। और वह खुद बियर की झाग में तब्दील हो जाती है। यह सत्य है कि 'ब्लाक होर्सा' के बियर कंपनी, और ब्लेड कंपनी को करोडों रुपये मिल गए होगा। करोडों रुपयों के लिए ही स्त्रियों की देह

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरी वाली लडकी - पृ. 22

बेची जा रही हैं। उदय जी सुनीला और आशामिश्र को अपनी देह आपका जो अधिकार है उससे सजग नारी की मानते हैं। कहानी में दोनों का अंत बहुत भयानक रहा था। सुनीला एड्स की शिकार हो गयी थी और आशा मिश्रा को काट-काट कर तंदूर में भून कर तंदूरी चिकन बनाई गई थी। उदय जी यह भी बताना चाहते हैं कि कई तरह के उपभोग के बाद स्त्रियों को निर्मम ढंग से छोडा जाता है।

उदय प्रकाश ने अपनी कविताओं में भी पैसों की ताकत एवं सत्ता की ताकत दिखाकर स्त्री को विवश करने की बात उठाई है। कुछ स्त्रियाँ अपनी पराधीन वृत्ति से शोषण की शिकार बनती है।

> "सिनेमा हाल की सबसे अगली कतारों पर बैठे हुए वे
> मनोरंजन उद्योग का बक्स
> आफिस तप करते थे और जन अस्सी लाख या डेढ करोड
> की फीस लेकर नाचती थी एक आइटम गेल
> हिलाती थी अपने कूल्हें और छातियाँ
> तो उनकी सीटियाँ बजती थी अंधेरे में।"[1]

हमारे बीच में अनेक स्त्रियाँ ऐसी हैं जो पैसों की ताकत देखकर उसके पीछे जाती है। एक तो अपने को 'सेलिब्रेटी' बनाकर समाज में नाम लेने के लिए और दूसरा तो अपने परिवार की आर्थिक समस्याएँ सुधारने के लिए तीसरा जो है पति द्वारा उपेक्षित होकर अपने बच्चों के लिए जीवित होनेवाली स्त्री। उदय प्रकाश

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - सफल चुप्पी - पृ. 26

की कहानी 'दिल्ली की दीवार' अपने पति द्वारा वंचित होकर बच्चों के लिए जीनेवाली सुषमा की कथा है। बच्चों एवं माँ के पालन पोषण के लिए सुषमा की आमदनी पर्याप्त नहीं थी। इसलिए वह रामनिवास के साथ रिश्ता जोडते हैं। जब रामनिवास काला धन छुराकर अमीर बन गया तब से लेकर सुषमा उससे बातें करती है, रिक्शा में जाती है और होटल में भी जाती है। सुषमा रामनिवास से पैसा वसूल करती है। रामनिवास उनके लिए पैसा डेपोसिट भी करता है। रामनिवास स्त्री एवं शराब दोनों को मस्ती का साधन मानता है। क्योंकि उसके पास धन हैं, इसके बल पर वह सबकुछ खरीदता है। धन पर हैं सुषमा की दिलचस्पी पैसा की चमक में डूबी सुषमा से रामनिवास कहता है - "मस्त रह और फिकर न कर। जब तक टेंट में माल है तब तक डरने की क्या बात है ! इसके बाद उसने प्यार से कहा, "आजा, एक चुप्पी दे दे और झोले से बोतल निकाल।"[1] उदय जी हमें याद दिलाते हैं कि इस टेंट में होनेवाले पैसों की ताकत पर अनेक सुषमाएँ अपना सब कुछ छोडने के लिए तैयार हैं। कार्लगेल बननेवाली अनेक स्त्रियाँ भी हमारे बीच में हैं। ऐसी स्त्रियों की चर्चा भी उदय जी की रचनाओं में हम देख सकते हैं।

2.2.4 कार्लगेल बननेवाली स्त्रियाँ

उपभोक्ता समाज के लिए कार्लगेल बनना आज तो बुरा बात नहीं पश्चिमी सभ्यता के वरदान के रूप में यहाँ की स्त्रियों ने इसे अपनाया। भारतीय संस्कृति में वेश्याएँ हाशिए पर हैं। आज वे अपना नाम कर्लगेल में बदलकर समाज के

---

1. उदय प्रकाश - दरियाई घोडा - दिल्ली का दीवार - पृ. 103

प्रतिष्ठित लोगों के बीच एवं अमीर होकर जीवन बिताती हैं। अपने शरीर को उपभोग के लिए देने में वे तैयार हैं। उदय जी ने अपनी लंबी कहानी 'दिल्ली की दीवार' में 'कार्लगेल' को अत्यन्त रोचकता के साथ पेश किया हैश सोलहवीं सदी के उसी खंडहर में राजवती की बहन फूलो, आजदपुर सब्जीमंडी के निकास पाटक पर मूँगफली बेचनेवाले जगराज की पत्नी सोमाली और लालकिले के आसपास चरस बेचनेवाले मुस्ताक की फुफेरी बहन सलीमन वे तीनों धन्धा करती थीं। वहाँ अक्सर आ जानेवाले स्मैकिए तिनक भूसन और आज़ाद से सोमाली अनेक पैसा वसूल करती है। इसके अलावा वे शाम एवं रात में भी अपने ग्राहकों की खोज में घूमती हैं। पार्टी में भी जाती है, वहाँ भी अनेक ग्राहक अपनी इच्छा पूर्ति के लिए जाते हैं। इसका खुलासा उदय जी इसप्रकार करते हैं - "सलीमन और फूलो शाम को रिक्शा लेकर सडक पर ग्राहकों की खोज में भी घूमती थी। फूलो कभी कभी 'पार्टी' में भी रात-रात भर के लिए बाहर जाया करती थी।"[1] यही स्थिति है आज गाँव एवं शहरों में। गाँव से अनेक लडकियाँ शहरों में कार्लगेल बनकर आती हैं। वह शहरों में बडे प्लाट खरीदकर अमीर लोगों के समान जीवन बिता रही है। इस तरह की लडकियों का चित्रण उदय प्रकाश इस प्रकार करते हैं - "गुलशन, राजपती और फूलों इस खडहर के निवासियों में सबसे अमीर थे।... फूलों गाँव से यहाँ रहते आ गई थी कि वे लोनी वार्डर की तरफ घर बनाने के लिए प्लॉट देखने कई बार बाहर चुके थे।"[2] आनेवाली पीढि इन अमीर लोगों के प्रति प्रभावित होकर उनके

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख - दिल्ली के दीवार - पृ. 76
2. वही - पृ. 76

समान बनने के लिए प्रयत्न करती है। उदय जी इस पर भी चिंतित हैं, उनका कहना है - "....मैं भी उसी तरह कोई काम पकड लूँगा।"[1] युवा पीढ़ी का यह रास्ता तो खतरनाक है। इन सारे मुद्दों के पीछे उपभोग संस्कृति से उत्पन्न इन्द्रिय बोध की भूमिका बडी है।

2.2.5 सीमातीत इन्द्रिय बोध

हर एक उपभोग के पीछे सुखवाद की परिकल्पना है। सुखवाद तो इन्द्रिय बोध से उत्पन्न हुआ। इस अवसर पर शंभुनाथ का कथन महत्वपूर्ण है। उनका कहना है - "उपभोग के पीछे सुखवाद है। मनुष्य की इच्छाएँ केवल उन्हीं चीज़ों तक सीमित नहीं रह सकती, जो जीवन को संभव बनाती है। जब तक जीवन है सुख का भोग करो।"[2] आज यह सुख स्त्री सौंदर्य में सीमित हुआ। उपभोक्ता-संस्कृति स्त्री सौन्दर्य को मनोरंजन का रूप दे रही है। इसलिए स्त्री अपने सौन्दर्य पर चिंतित है। वह कई प्रकार के क्रीमों का इस्तेमाल कर एवं ब्यूटीपार्लरों में जाकर अपने सरीर को अत्यन्त सुन्दर बनाती है। उदय प्रकाश आज की स्त्रियों की इस नज़रिये पर चिंतित हैं। आज कालेजों एवं विश्वविद्यालयों का अभिन्न हिस्सा है सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ अपने सौन्दर्य एवं बौद्धिक धरातल को दूसरों के सामने रखकर अपने को स्तरीय लोग समझनेवाले लोगों के बीच हम जी रहे हैं। मिस यूनिवेर्स, मिस इन्डिया, मिस एशिया, मिस पसफिक, मिस केरला आदि अनेक

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख - दिल्ली के दीवार - पृ. 76
2. शंभुनाथ - संस्कृति के उत्तर कथा - पृ. 153

'ब्यूटी कोन्टस्ट' हमारे बीच में है। इस पर प्रभावित होकर विश्वविद्यालयों में सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ हो रही है।

उदय प्रकाश 'पीली छतरीवाली लडकी' कहानी मे एक फैशन प्रतियोगिता के पोस्टर की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। ये पोस्टर देखकर विश्वविद्यालय की अनेक छात्राएँ प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आती हैं। ये पोस्टर विश्वविद्यालय के लइब्ररी के मुख्य दरवाजे की वायी ओर वहाँ सीढियाँ खत्म होती थी, दीवार पर एक तीन फूट बाद दो फूट का पोस्टर चिपका था, जिसमें एक लडकी काले रंग की निर्मित स्कर्ट में, कमर पर हथेलियाँ टिकायें अपने नितंबों को पीछे और छातियों को आगे धकेलने की कोशिश में अंग्रेजी के 'एस' जैसी हो गयी थी। लडकी के नीचे खूब मोटे अक्षरों में अंग्रेजी में लिखा था। जिसका मतलब यह था-

> शिप्रा इंटरनाशनल इंटरप्राइजज द्वारा आयोजित
> पहला ब्यूटी कांटेस्ट
> फेमिना इंडिया द्वारा अधिकृत
> मॉडलिंग, अभिनय, विज्ञापन और फैशन के करियर
> में सबसे बा मौका
>
> तारीख : 10 सितंबर, दिन - रविवार, स्थान - यूनिवर्सिटी ओडिटोरियम
> समय : रात दस बजे से 11.30 तक"[1]

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरी वाली लडकी - पृ. 44

मॉडलिंग, अभिनय, विज्ञापन और फैशन के करियर में आगे बढ़ने के लिए छोटे-छोटे स्तर (विश्वविद्यालय) पर भी प्रदर्शन की वस्तु बन गये हैं। समाज के प्रतिष्ठित लोग इसका प्रोत्साहन देते हैं। 'पीली छतरीवाली लडकी' में वैसचानसलर ने भी मणिपुरवाले विद्यार्थी की हत्या से जब विश्वविद्यालय को छुट्टि देनी पडी तब वहाँ होनेवाली सौन्दर्य प्रतियोगिता को स्थगित करने के संबन्ध में ऐसी चिंता व्यक्त कर दी - "आय विल लुक इन टु इट। वैसे वह बहुत बुरा हुआ। मुझे उसके फादर से बडी सिंपथी है। पुअर चैप मैंने मणिपुर के गवर्नर और चीफ सेक्रेटरी को फोन किया.... उसके फादर तक सूचना भिजवाई... मालूम है, उसी की वजह से हमने यूनिवर्सिटी में इस सितंबर को होनेवाले फैशन शो और कल्चरल प्रोग्राम पोस्टपोन किया.... इसमें यूनिवर्सिटी को आठ लाख का घाटा हुआ।"[1] विश्वविद्यालय में सपाम तोबा की लाश को मणिपुर तक भेजने के लिए पैसा की कमी थी। लाश को अंत में रेलगाडी में भिजवा देता है। सौन्दर्य प्रतियोगिता चलाने के लिए यूनिवर्सिटी में फंड है। उदय जी हमें और एक तरीके से सोचने के लिए विवश करते हैं कि भोग की तत्परता के सामने मनुष्य को बाकी सबकुछ नगण्य है। वहाँ मानवीय मूल्य का कोई स्थान नहीं अर्थात मानव मूल्यों का ह्रास हो रहा है।

आज की उपभोग संस्कृति में सौन्दर्य को प्रमुख स्थान दिया गया है। स्त्रियों को सौन्दर्य प्रसाधन आभूषण और फैशन के विज्ञापनों को दिखाकर समझते हैं कि वे सब उपभोग की वस्तु मात्र हैं। इसलिए कई नई-नई फैशन स्त्रियों की पहनावे में

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 92

आ गई। युवा पीढ़ी के सामने फिल्मी ज़िन्दगी और फिल्मी सितारे आदर्श बनकर मौजूद हैं याने के उनके आदर्श बन गए हैं। इसलिए 'पीली छतरी वाली लडकी' कहानी के नायक राहुल ने यूनिवर्सिटी के जिम में जाना शुरु किया था जिससे वह सलमान खान की तरह अपनी भुजाओं, कमर और धड बना सके। इसके बाद रेनवेन का काला चश्मा, रेक्लट या लेविस की एक जीस पैट और एक ही शर्ट, निराके के साक्स और वुडलै का बढिया जूता।"[1] यहाँ उपभोग संस्कृति ने किस प्रकार न्यूजनरेशन पर प्रभाव डाल दिया इसका चित्रण है। आज के समय से, मनोभावों से, स्थितियों से, परिस्थितियों से तथा परिवेश से सीधे जुडे हैं उदय प्रकाश जी। 'पीली छतरीवाली लडकी' में वैश्विक चेतना और उपभोक्तावादी संस्कृति का बेकात चित्र है - इससे ज़्यादा मत कमाओ, इससे ज्यादा मत सोओ, इससे ज्यादा हिंसा मत करो।"[2] ये सारे सिद्धान्त धर्म ग्रन्थों में भी थे, समाजशास्त्र या विज्ञान अथवा राजनीतिक पुस्तकों में भी, उन्हें कूडेदान में डाल दिया गया था। इस आदमी ने बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में पूँजी, सत्ता और तकनीकी और समूची ताकत को अपनी मुट्ठियों में भरकर कहा था स्वतंत्रता चीखते हुए आज़ादी। अपनी सारी एषणाओं को जाग जाने दो। इस धरती पर जो कुछ भी है तुम्हारे द्वारा भोगे जाने के लिए है। न कोई राष्ट्र है, न कोई देश। समूचा भूमंडल तुम्हाराहै। न कुछ नैतिक, न कुछ अनैतिक, न पाप, न कुछ पुण्य, खाओ पिओ और मौज करो।

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 8
2. वही - पृ. 12

इन्द्रिय बोध वास्तव में उपभोग संस्कृति का प्रोडक्ट है। इसलिए हर आदमी अपने इन्द्रियों के प्रति सजग है। इन्द्रिय बोध की चिंता से अनेक उत्पन्नों की बिक्री होती है। बाज़ार को पुष्ट करने में इन्द्रिय बोध का स्थान ऊँचा है।

2.2.6 बाजारु संस्कृति

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे जीवन को अधिक आसान एवं खुश्हाल बनानेवाली वस्तुओं की उपयोगिता में वृद्धि हुई। याने उपभोग कापी बढ गया। संपूर्ण समाज उपभोक्तावाद की गिरफ्त में पड रहा है। त्रिफुवन शुक्ल के अनुसार "आज का भारतीय मानस उपभोक्ता संस्कृति का समाज हो गया है। इससे हमारा मनुष्य समाज एक वस्तु के रूप में बदल चुका है।"[1] भूमंडलीकरण में हर वस्तु उपभोग की नज़रिये से देखा जाना है। उपभोग की वस्तु क्या है? यह बाज़ार ने तय किया है। चरम उपभोक्तावाद के इस युग में बाज़ार का जादू सब कहीं है। इस बाजार ने हमारी संस्कृति, कला, संगीत, साहित्य, धर्म, मानव सबको बिक्री की चीज़ में धकेल दिया है। सुधीश पचौरी ने ठीक ही कहा है कि हमारी ज़रूरत, प्रभाव संस्कृति, ज्ञान, यानी मनुष्य की समस्त क्षमताएँ पण्य के रूप में उत्पादन की व्यवस्था में अंतर्भुक्त होती है और बिकती है। हमारी संस्कृति भी नये-नये सिम्बल के रूप में बाज़ार में बिकती है। वनस्पति घी कोई नहीं कहना, बल्कि डाल्डा, बावर्ची, रथ, खजूर (ब्रांड) कहकर निकालते हैं। ब्रांड रूपी घी बाजडार से यदि

---

1. साक्षात्कार - मार्च 2005 - पृ. 75

खरीदते हैं तो हम महसूस करते हैं कि हम ग्लोबल बन गये। माइकल शुडसन ने कहा है कि उपभोक्ता समाज में वस्तुओं की ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल होता है और मानवीय मूल्यों को तोड मरोडकर विकृत किया जाता है। वहाँ लोग जरूरत से ज़्यादा अपनी प्रतिष्ठा बढानेवाली चीजों का इस्तेमाल करते हैं। इस प्रकार देखा जाये तो प्रतिष्ठा देनेवाली वस्तुओं की चमक है बाज़ार।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में उत्तर आधुनिकवाद के माध्यम से वैश्वीकरण एवं बाजारवाद की संकल्पना अत्यधिक तेजी से उभरती है। वैश्वीकरण एक प्रकार से समुद्रमंथन है। इसका मथनी है बाज़ारवाद। इस मथनी से एक ओर भोग विलास के अपार भौतिक संपदा, नए अवसर जैसे कंपनियों के हालिवुड पाकेज, मौज मस्ती के खेल और विज्ञान एवं टेकनोलजी की अपार चीज़ें मिलती हैं। दूसरी ओर दुःख, गरीबी और विस्थापित लोगों का विषय भी उपस्तित है। भारतीय मूल्य ह्रास हो रहा है। डॉ. वनजा जी के मुताबिक "बाजारु संस्कृति वर्तमान समय की संस्कृति है। उस संस्कृति में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है।"[1] उदय प्रकाश अपनी कविता 'चाकी पाडे मुपकर गया है' में बाजारु संस्कृति का प्रतिरोध देखिए-

"साथियो, यह एक लुटेरा समय है
नई अर्थ व्यवस्था की यह नई सामाजिक संरचना है
आवारा हिंसक पूँजी की यह एक बिलकुल नई ताकत है

---

1. डॉ. के. वनजा - हरित भाषा वैज्ञानिक विमर्श - पृ. 59

और इसमें जो कुछ भी
कहीं लोकप्रिय है
वह कोई न कोई अमरीकी ब्रांड है
गुलाम होना और गुलाम बनाने के सारे खेलों में
अब बहुत बडा पूँजी निवेश है।"[1]

बाज़ार में लोकप्रिय चीज़ आज दूसरे रूप में हमारे सामने आये। याने हमारी चीज़े ब्रांड का लेबल में तब्दील हुई। ब्रांड का निर्माण गुलाम होने और गुलाम बनाने का खेल भी है। इस खेल में हम भी भाग लेते हैं।

उदय प्रकाश की प्रमुख कहानी 'पॉल गोमरे का स्कूटर' के मुख्य पात्र रामगोपाल के ज़रिये लेखक समकालीन वास्तविकता का उन्मीलन करते हैं। समकालीन परिस्थितियों से गुज़रते हुए रामगोपाल दो फैसले लेते हैं, ये फैसले ही इस कहानी की रीढ है। उसका पहला फैसला है - अपना नाम बदलकर पॉल गोमरा करना है और दूसरा है - एक स्कूटर खरीदना। विखण्डीकृत नया नाम और स्कूटर दोनों भूमंडलीकृत प्रतीक अवश्य है परन्तु वे दोनों प्रतीक जिस बदली हुई जीवन दृष्टि की माँग करते हैं, उससे पॉल गोमरा का कोई ताल्लुक नहीं वे उससे अजनबी भी हैं।

यथार्थ मशीन युग से निकलकर इलक्ट्रोनिक और उसके आगे के युग में जा रहा है। बच्चे जादुओं, परिकथाओं और डायनोसर जैसे प्रागैतिहासिक जन्तुओं

1-. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - चाकी पाडे मुकर गया है -पृ. 32

के साथ गिल्ती - डंडा या बेसखोल खेल रहे हैं। भीड को मारना और हवाई जहाज़ों का अपहरण मामूली लफगों का खेल बन गया है। परिवेश में रामगोपाल को अपना नाम बहुत ही पुराना लगा। दर असल उनके पिता लाल बहादूर सक्सेना ने बहुत सोच समझकर अपने बेटे का नाम रामगोपाल रखा था, जिसमें उनके अनुसार रामभक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति का सुखद सौहार्दपूर्ण धर्मनिरपेक्ष संयोग है। लेकिन नई पीढ़ी अपना नाम स्वीकार कर लेती है। इसकी ओर संकेत करते हुए उदय जी लिखते हैं - "उन्होंने विखण्डनवादी पाठ्यपद्धति अपनाते हुए सिर्फ यह किया कि अपने नाम रामगोपाल के 'पाल' को तोडकर अलग निकला और उसे हल्का सा डिस्टार्ड करते हुए 'पाल' बना दिया। इसके बाद बाकी बचे 'रामगो' को उल्टी तरफ से पढा लिए 'गोमरा'। इस तरह इनका नाम 'पालगोमरा' हो गया।"[1] निःसन्देह यह नाम अपाचे इंडियन लूई बैक्स, रेमु फर्नाडीस, सौम पित्रोदा या टी के बैजी जैसे नामों से बराबरी का टक्कर लेता है। नाम परिवर्तन को संकुचित दायरे में नहीं देखना है यह उत्तर आधुनिक संस्कृति की ओर, विस्थापन की ओर गहरी चाह है, जिसके तहत परम्परा की जड होने का एहसास है, साथ ही साथ भूमंडलीकृत उपभोक्तवादी संस्कृति की खतरनाक मरीचिकाओं की ओर अग्रसर होने की प्रबल कामना है। रामगोपाल दुर्बल पात्र नहीं। वह प्रतिरोध करता है। हमारी अपसंस्कृति की बीमार-चेतना ही इसमें परिलक्षित है।

'पॉल गोमरा' का स्कूटर खरीदने का फैसला भी इस बदलते सांस्कृतिक परिवेश की ही उपज था। इसके अनुसार मारुति, एस्टिम, ज़ेन, सियेरा, सुमो, होडा,

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - पृ. 47

कबासाकी, सुज़ुकी और पता नहीं किन किन गाडियों में चलने लगे थे। इसलिए यद्यपि स्कूटर चलाना नहीं आता। फिर भी पॉल गोमरा स्कूटर किस्म में खरीदना है। यह बाजारु संस्कृति के चंगुल में फँसे मध्यवर्ग की विवशता है। भूमंडलीकरण और मुक्तबाज़ार औपनिवेशिक साम्राज्यवाद से अधिक भयावह है। इसमें दुश्मन की कोई सीधी पहचान नहीं। फिर भी उसकी छाया दिन-प्रतिदिन बढती जा रही है। तेज़ी से बाज़ार में तब्दील होते जीवन की मुख्यधारा ने आम आदमी के अस्तित्व को ही चिथडे-चिथडे कर दिया है। उदय जी ने इसकी ओर भी विचार किया है - "पॉल गोमरा सिर्फ कवि बनने के सपने देखता रहा.... और इस नए यथार्थ ने उनसे वह स्वप्न भी छीन लिया था। वे कुछ नहीं रह गये थे। न कवि, न नागरिक, न शायद ठीक ढंग से मनुष्य ही।"[1]

उदय प्रकाश की 'पीली छतरीवाली लडकी' आज की सच्चाइयों का दस्तावेज़ है। उदय जी सच्चे ग्लोबलाइसेशन और बाज़ारीकरण के खिलाफ नहीं। प्रयोजन के लिए वस्तुओं का उपभोग बुरी बात नहीं। वस्तुओं को स्मृतियों की ओर ले जाना या म्युजियम में ले जाना अच्छा नहीं लेकिन आज मनुष्य वस्तु में तब्दील हो गया। आज हम किसी भी तरह स्वतंत्र नहीं, हम बाजारतंत्र के शिकार बन रहे हैं। स्वप्न भी हम से छीन लिया जाता है। कहानी के नायक राहुल के ज़रिये उदय जी कहते हैं - "मैं बाज़ार का विरोधी नहीं हूँ। लेकिन मार्केट कोई कलक्टिव ट्रीम नहीं है। यह कोई युटोपिया नहीं। इसमें कोई स्वप्न नहीं देखा जा सकता इसमें ऐसा

---

1. उदय प्रकाश - पॉल गोमरे का स्कूटर - पृ. 66

कुछ नहीं है जो उदात्त, विराट और नैतिक हो।"[1] बाजारवाद आज संस्कृति के साथ एक मुहावरे बन गया। पूँजीवाद के साथ बाज़ार का उदय भी हुआ इसलिए बाज़ार का उदय तो नयी व्यवस्था नहीं। औद्योगीकरण के विकास के साथ बडी समस्या के रूप में बाजार की तलाश हुई। बाज़ार की तलाश ने उपनिवेशवादी व्यवस्था को जन्म दिया। बाज़ार मे होनेवाली चीज़ों को ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए विज्ञापन अहम भूमिका निभा रहा है। विज्ञापन चीज़ों को नये ब्रांड के रूप में हमारे सामने रखते हैं।

2.3 विज्ञापन एवं ब्रांड संस्कृति

उपभोक्तावाद के इस दौर में ब्रांड (Brand) एक संस्कृति है। "भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में संस्कृति एक उद्योग की तरह मानी जाती है जहाँ उत्पाद, पण्य, ब्रांड में शामिल है। ब्रांड निति अपने ब्रांड को ग्लोबल उपभोक्ता संस्कृति एक विदेशी संस्कृति अथवा एक स्थानीय संस्कृति के सिम्बल के रूप में रखते हैं।"[2] आज ब्रांड एक रोचक अवधारणा बन गये है। ये ब्रांड हमें आधुनिक, शहरी एवं आकर्षण की वस्तु बनाते हैं। आज लूइफिलिप, फास्ट्राक, वुडलांट, अडिडास, रीबोक, किल्लर, पान अमेरिका और ग्राफीत आदि ब्रांड हमारे बीच में मौजूद है। इन ब्रांडों का नाम पहले आता है वहाँ साधन क्या है? इसकी जरूरत तो नहीं होती। ये ब्रांड उपभोक्ताओं को गारंटी देकर बाज़ार में प्रतिष्ठित व्यक्ति को बनाते हैं। इसके संदर्भ

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 39
2. प्रभा खेतान - भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र - पृ. 58

में प्रभा खेतान की नज़रिया देखिए "ब्रांड का अर्थ केवल एक छपा हुआ रंगीन बिल्ला नहीं जिसे उत्पादित वस्तु पर चिपका दिया जाए। ब्रांड का मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक आयाम है। ब्रांड केवल उत्पादिन वस्तु का ही प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि अपनी साख भी रखता है। यह अपने बारे में उपभोक्ताओं से संवाद स्थापित करता है।"[1] ब्रांड आज प्रतीक है साथ ही साथ एक माध्यम बन गया है। आज बाजार में विदेशी ब्रांड है, स्थानीय ब्रांड बाज़ार एवं हमारे मन से दूर हो गये। जैसे बोबे डइंग, ग्राफीत आदि ब्रांड साधनों के लिए हम काफी खर्च करते हैं। हम भी ब्रांड के वाहक बनते हैं या ब्रांड में बदल जाते हैं।

बाज़ार को पल्लवित करने के लिए विज्ञापन बडा रोल आदा कर रहा है। ब्रांड को जनता तक पहुँचाने का कार्य विज्ञापन द्वारा ही संभव है। क्योंकि विज्ञापन द्वारा ही हम ब्रांड के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। उस साधन को खरीदने के लिए हम विवश हो जाते हैं। इसी से हमें पता चलता है कि उपभोक्ता एवं उपभोग की वस्तु के बीच की दूरी विज्ञापन कम करता है। विज्ञापित वस्तु को ब्रांड बनाता है। ये ब्रांड मीडिया के द्वारा हम तक पहुँच जाते हैं। बाज़ार का अभिन्न अंग बन गया है मीडिया। मीडिया का उद्देश्य क्या है? हम देखेंगे। "बाज़ार में उपभोक्तावादी वस्तुओं की बिक्री बढाने तथा व्यापारिक गतिविधियों के संचालन के लिए संदेशों के आदान प्रदान तक सीमित होकर रह गया है।"[2] लेकिन आज मीडिया के दुष्प्रभाव से हमारा

---

1. प्रभा खेतान - भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र - पृ. 58
2. नया ज्ञानोदय - जुलाई 2003 - पृ. 31

घर बाज़ार में तब्दील हुआ। एक साधारण व्यक्ति क्या खरीदे क्या नहीं इस संदेह में फँस जाएगा। बाज़ारवादी शक्तियाँ अपने वर्चस्व के लिए विज्ञापनों का सहारा लेती हैं। इसके संबन्ध में रमेश कुन्तल मेघ ने कहा है - "वस्तुतः बाज़ारवाद और बाज़ार पूँजीवादी साम्राज्यवाद (नियो इम्पीरियलिज्म) का एक हथकंडा है। इसकी चकाचौध आम आदमी और मध्यवर्ग के परिवारों में वस्तुओं के संग्रह तथा उपभोग की एक हाविश, एक होड, एक नस्टाल्जिया पैदा करती है। अर्थात भूमंडलीकरण निजीकरण - उदारीकरण में अंकित करते हैं।"[1] हम जैसे लोगों के मन में यह भाव भी पैदा होता है कि श्रेष्ठ ब्रांड के अलावा हमारी इच्छापूर्ति कोई नहीं करेगा। इसी प्रकार विज्ञापन हमारे सोच विचार को नियंत्रण में रखता है। विज्ञापन बाज़ार के लिए अपेक्षित है। विज्ञापन के ज़रिये हम भी साधनों को खरीदते हैं। विज्ञापन में बडे-बडे ब्रांड साधनों की बिक्री के लिए करोड रुपये के इनाम को लेकर अनेक मॉडल में आते हैं। ब्रांड साधनों की बिक्री के साथ उनके नग्नता भी बेची जा रही हैं। साधारण लोगों के लिए उपयोगी साधनों का विज्ञापन यहाँ नहीं होते। उदय प्रकाश की 'कवि की पीडित खुफिया आँख' इसे देखती है-

> "अप्रासंगिकताएँ क्यों हावी हैं इस कदर तमाम अच्छी
> और जरूरी चीजों पर
> जो चीज ठीक-ठाक है और जो चाहिए तमाम लोगों को उनका
> विज्ञापन क्यों नहीं दिखाई देता कहीं?"[2]

---

1. वर्तमान साहित्य - फरवरी 2008 - पृ. 34
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - कवि की पीडित खुफिया आँख - पृ. 34

साधारण ग्राहकों की आवश्यकता पर कोई विज्ञापन नहीं हुआ है। उनकी आवश्यकता सिर्फ इतनी है कि कंघी, खैनी, राई, अरहर और गुड़। इन चीज़ों के विज्ञापन के लिए कोई मॉडल नहीं आता है, क्योंकि उनके लिए ये खाद्य पदार्थ तो मूल्यवान नहीं। उदय जी व्यंग्य को अपनाते हुए इसकी ओर इशारा करते हैं - "तमाम लोगों की आवश्यकता के लिए अपने कपडे क्यों नहीं उतारती मधु सप्रे और अंजली कपूर।"[1] अर्थात बडे-बडे मॉडल भी अमीरों के विज्ञापन के लिए तैयार होकर खडे हैं। साधारण लोगों ने भी विज्ञापनों में फँसकर अपने घर को बाज़ार में तब्दील किया। बडे-बडे ब्रांड के विज्ञापनों को देखकर युवापीढी भी इसमें फंस जाती है। उदय जी की रचनाओं में इस युवापीढी का मार्मिक चित्रण है।

2.3.1 विज्ञापन के गिरफ्त में पडी युवापीढ़ी

आज के विज्ञापनों के लिए फिल्म आक्ट्रस (Film Actress) और मॉडलिंग करनेवाली अनेक युवतियों आती है। हर एक विज्ञापन के लिए करोडों से ज़्यादा रुपया लेकर नग्नता की बिक्री करती हैं। ये लड़कियाँ कैमरे के सामने नंगी-अधनंगी परेड करती हैं। इसको देखकर उदय प्रकाश कहते हैं - "बिना चुपचाप किसी स्टोव या किसी तंदूर में दाखिल हो जाती है।"[2] इस प्रकार चुप-चाप होकर चलनेवाली नंगी-अधनंगी मॉडल के विज्ञापन में फँस जाते हैं हमारे नौजवान। इस प्रकार मॉडल के विज्ञापनों में डूबकर अस्तित्वहीन नौजवान के खुरदेर यथार्थ को उदय जी यों दिखाते हैं-

---

1. उदय प्रकाश - नींव की इट हो तुम भी - पृ. 47
2. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - एक नसीहत, जो बनाये जाते हैं - पृ. 51

"....सुनिये भाई साहब, यहाँ एक बार बीबीसी के लिए शूटिंग
करने सुस्मिता
सेन आयी थी और एक बार और मैंडन, जिन्हें नेशनल
अवार्ड मिला
था... 'स्मैल' के अंधेरे से घुरता एक मरणासन्न
तेजस्वी नौजवान बताते हैं।"[1]

उदय प्रकाश की चर्चित कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में विज्ञापन के आकर्षणीय से स्कूटर खरीदने में विवश होनेवाले पॉल गोमरा का जिक्र है। उदय जी स्कूटर को उपनिवेशी ताकत के प्रतीक मानते हैं। पॉल गोमरा अपने टी.वी में स्वप्न जैसा विज्ञापन देखते हैं। विज्ञापन को उदय जी हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं - "बस्तर, अबूझमाड, किरर या मयूर, भंज जैसे किसी आदिवासी इलाके में अपने तीर धनुष लेकर निकल हुए आदिवासियों का एक झुंड अचानक जंगल में लोहे का एक अजीबोगरीब जानवर देखता है। वे उस अपने ज़हर बुझे बाण चलानेवाले होते हैं कि उन्हें में से एक युवा आदिवासी, जो दुरसाहसी और नई चीज़ के प्रति आदिम जिज्ञासा से भरपूर हैं उन्हें रोककर उस जानवर के पास पहुंचना है और उसे निश्चल पाकर उसके ऊपर चढ जाते हैं और उसकी पीठ और पुष्ठों पर कूदने लगता है। और चीखता है "हू... हू स्वांग सोंगा।"[2] विज्ञापन में दिखाई पडनेवाला जानवर स्कूटर है। आदिवासी लोग उस लोहे के जानवर के बारे में भी कुछ नहीं

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - एक नसीहत, जो बनाये जाते हैं - पृ. 52
2. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 139

जानते। पॉल गोमरा को भी स्कूटर चलाना नहीं आता। फिर भी वह स्कूटर को आज की संस्कृति का हिस्सा मानकर स्कूटर खरीदता है। पॉल गोमरा का स्कूटर उनके घर में सभ्यता का प्रतीक होकर खडा है। विज्ञापन की जगत आम आदमी को सब कुछ खरीदने का आह्वान देती है। नये नये आविष्कारों के साथ विज्ञापन हमारे सामने आ रहे हैं। यह हमको एक फैंटसी की जगत की ओर ले जाता है। पॉल गोमरा भी दैनिक जीवन में भी फैंटसी जगत में जीनेवाले आदमी की प्रतिनिधि भी है। वह नेहर जेस्मिया के विज्ञापनों को देखकर उनको प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाला है। अपनी पत्नी सोमलता सक्सेना भी बीच बीच में मॉडल के रूप में व्यवहार करती है। एक बार पॉल गोमरा के लिए दरवाज़ा नेहर जेस्मिया ने खोला, वास्तव में वह जेस्मिया नहीं थी, उनकी पत्नी सोमलता सक्सेना थी। उदय जी इसका खुलासा यों करता है - "उसके घर का दरवाजा उनकी स्नेहलता सक्सेना नहीं, मशहूर मॉडल नेहरिया जेसिया ने खोला था उसकी मूल डिज़ाइन की परिकल्पना पेरिस के फैशन डिजाइनर रेमिया कार्तिक ने की थी।"[1] अर्थात वर्तमान ज़िंदगी में फिट न होकर कल्पना जगत में जीनेवाले आदमी का द्वन्द्व है यहाँ। हम भी अनेक मॉडलों से प्रभावित हैं। आज मॉडल बनने की ललक होनेवाली अनेक स्त्रियाँ हमारे बीच में है। उदय जी ने अपनी रचनाओं के ज़रिये मॉडल बनने में प्रयत्न करनेवाली स्त्रियों का चित्रण किया है।

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 127

2.3.2 स्त्रियों की मॉडल बनने की ललक

आज विज्ञापन के मायाजाल में पडकर मॉडल बनने के लिए युवतियाँ तैयार हो रही हैं। उदय जी फिल्म फील्ड से जुडनेवाले रचनाकार होने के कारण फिल्मी जगत के खोखलेपन को हमारे सामने यों दिखाता है - "मॉडलिंग की खास-जोख के लिए इंची टेप से नाप-नापकर, डायटिंग और एक्सरसाइज से तैयार किया गया कृत्रिम शरीर फिर ऊपर से वैक्सिंग, फेशियल, साओना क्या-क्या... उनके सिर के बाल और शरीर के रोयें भी सियेटिक लगते यहाँ तक कि उनकी बंगलों में शेविंग के बाद का जो हल्का नीला-हरा रंग होता, वह भी उसे कलरिंग लगता ज्यादा नहीं।"[1] उदय जी ने मॉडलिंग की तैयारी में लगी हुई स्त्रियों का चित्रण अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया है। अनेक युवतियाँ पैसे की लालच में मॉडलिंग को अपनाती है। ग्रामीण युवतियों विज्ञापन जगत की दुनिया में अधिक मात्रा में आती है। ग्रामीण युवतियों को सस्ते विज्ञापन की मॉडल बनाती है। जैसे सस्ते साबुन, हेयर रिमूवर और अंडरगारमेन्ट्स के विज्ञापन का मॉडल बनती है। उनको कम वेतन मिलने के कारण अन्य क्षेत्रों की ओर चलती है। उदय जी ने अपनी कहानी मैंगोसिल में इसका चित्रण यों दिया है - "दीप्ती और शालिनी सी ग्रेड मॉडल है और सस्ते साबुन, हेयर रिमूवर और अंडर गारमेन्ड्स के सस्ते विज्ञापनों के अलावा वे रात में होटल या प्राइवट पार्टियों में भी चलती है।"[2] ये दोनों गाँव से

---

1. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लडकी - पृ. 9
2. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - पृ. 131

आनेवाली युवतियाँ हैं। सस्ते विज्ञापन के मॉडल होने पर भी होटल या प्राइवट पार्टियों से भी ज्यादा इनाम मिलते हैं। इसलिए मॉडल बनना अपना प्रोफशन मानती है दोनों। अनेक युवतियाँ नंगी - अध नंगी होकर प्रोडक्ट की बिक्री बढाती है। उपभोग संस्कृति में स्त्रियों की नग्नता प्रदर्शन विज्ञापनों में हो रहा है। उदय जी 'पॉल गोमरे का स्कूटर' में अधनंगी होकर ब्लेड के विज्ञापन करनेवाली सुनीता के द्वारा हमारा ध्यान अपसंस्कृति के विचित्रता की ओर आकृष्ट करता है। अस्पताल के सफाई कर्मचारी की बेटी सुनीता... टी.वी के विज्ञापन में आठ फूट विशाल ब्लेड के मॉडल पर नंगी सो गई थी। सुनीला को अपने चेहरे के क्लोज शॉट में उसने इतनी निमग्न कुशलता और स्वप्नातीत भाव प्रवणता के साथ किया था।"[1] उदय जी पुरुष लेखक होने पर भी विज्ञापन जगत में स्त्री देह किस प्रकार बेची जा रही है इसका खुलासा करते हैं। क्षमा शर्मा की बात यहाँ उद्धृत करना यही निकलता है - "मीडिया में स्त्री की छवियों के बारे में अक्सर यह सुनायी देता है कि मीडिया ने भारतीय स्त्री की छवि को नहस नहस कर दिया है। अमेरिका और यूरोप की स्त्री छवियाँ टाँग उघाडे, सिडक्शन का इस्तेमाल करते हुए हमारे घरों में गुसी चली आ रही हैं। विज्ञापनों में स्त्रियों का ओवर एक्सपोज़र हो रहा है। चीज़ों को बेचने के लिए स्त्री की सेक्शुएलिटी का इस्तेमाल किया जा रहा है।"[2] अर्थात् स्त्री की सेक्शुएलिटी का इस्तेमाल करने से दर्शक एकाधिक बार उस विज्ञापित चीज़ भी हमारे मन पर अटक होती है। याने कि उस मॉडल एवं ब्रांड चीज़ों के पीछे हम भागते हैं।

---

1. उदय प्रकाश - अरेब-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 123
2. क्षमा शर्मा - इक्कीसवीं सदी की ओर - कृष्णकांत (सं) - पृ. 96

2.3.3 ब्रांड चीज़ों में स्त्री

ब्रांड आज भूमंडलीय बाज़ार की लोकप्रिय अवधारणा बन गयी है। इस अवधारणा को बढ़ावा देने में मीडिया एवं विज्ञापन एजनसी की भूमिका बहुत बडी है। इसलिए ब्रांड बाज़ार की प्रतिष्ठित करनेवाली कडी बन जाता है। मनुष्य ही आज ब्रांड में परिणित हुआ। विशेष रूप से स्त्री जाती ब्रांड के मॉडल बनती है। विज्ञापन बाज़ार के लिए अपेक्षित होता है। कई प्रकार के विज्ञापनों से उपभोक्ताओं को आकृष्ट करनेवाली विभिन्न कंपनियों हैं। वहाँ ब्रांडेड चीज़ों की बिक्री के लिए प्रचार होता है। उदय प्रकाश की कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में ब्रांड के विज्ञापन के मोहजाल में फँसकर उपभोग संस्कृति का हिस्सा बननेवाली आशामिश्र की कथा है। आशामिश्र बिहार के छपरा जिले के प्राइमरी स्कूल की टीचरी का काम छोडकर अपने उचक्के प्रेमी के साथ दिल्ली भाग आने वाली है। आज आशा मिश्र कंटेसा क्लासिक में चल रही है। क्योंकि उनके पास विज्ञापन से मिले पैसों की ताकत है। उदय जी आशा मिश्रा के एक विज्ञापन हमारे सामने दिखाते हैं - "....विज्ञापन में एक बलिष्ठ काले रंग के अरबी घोडे की खुरदरी पीट पर बैठकर, अपने पारभासक जांघिए के भीतर से 'द ब्लैक हॉर्स' नामक बीयर की बोतल निकालकर छातियों से उडेल ली थी और घोडे की पीठ पर बैठी-बैठी वह खुद बीयर की झांग में बदल गयी थी। काले घोडे की खुरदुरी पीठ पर सिर्फ आशामिश्रा का फेन बचा था, जो धीरे-धीरे उस बियर के ब्रांड में बदल रहा था।"[1] इस विज्ञापन

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 124

की निर्माता कंपनि ने दावा किया था कि इससे 'ब्लॉक हॉर्स' की जबरदस्ती बिक्री होगी। यह भी सत्य है कि बियर कंपनी को करोडों रुपये मिल गए होंगे। लेकिन आशा मिश्रा का जो त्रासद अंत हुआ उसका भी कहानी में जिक्र हुआ है जो भावना नहीं बल्कि सच है। आशा मिश्र को काट-काट कर तंदूर में भून कर तंदूरी चिकन बनाई गई थी। अर्थात उनके यौवन को छीनकर उसे छोड देता है। यही है आज के विज्ञापन या फिल्म जगत का सच।

2.3.4 विज्ञापन और बुजुर्ग-लोग

टी.वी जैसे मीडिया में आनेवाले विज्ञापन में युवापीढी मात्र नहीं बल्कि बुजुर्ग जाते हैं। जुकाम को कम करने के विज्ञापनों से लेकर कामोत्तेजना को बढाने के विज्ञापनों को भी हम देख रहे हैं। वयाग्रा जैसी कामोत्तेजना बढानेवाले विज्ञापनों में डूबनिवाले बुजुर्ग वर्ग भी हमारे बीच में है। ये बुजुर्ग अपनी शक्ति को दिखाने के लिए लड़कियों के पास जाते हैं। यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि विज्ञापन लोगों को और संस्कृति को मालामाल कर देता है।

उदय प्रकाश इसी प्रकार के बुजुर्ग वर्ग को हमारे सामने 'मैंगोसिल' कहानी में पेश करते हैं। गुलशन अरोडा सत्तर साल का बुजुर्ग है। पत्नी की मृत्यु के बाद अकेला रहता है। अकेलेपन से गुज़रने के लिए टी.वी देखने ही रहता है। टी.वी में अनेक प्रकार के विज्ञापनों को देखकर अनेक साधनों को खरीदा है। वह केसरी जीवन, शोट गन, और शिलाजीतयुक्त च्यवनप्राश, फार्टी, सिक्स्टी प्लस, और वयाग्रा का उपयोग बार-बार करता है। इन्हीं चीजों के उपयोग से उनके मन एवं

शरीर में काम वासना की स्फूर्ति होती है। इसी की पूर्ति के लिए किराये पर लडकियों को खरीदता है। इसकी जानकारी चंद्रकांत एवं गुलशन के बीच के संवादों से मिलती है - "....अभी काम करनेवाली को बुलाया है। आने ही वाली है तू उधर जहाँगीरपुरी में 'काम' कर हम इधर मॉडल टउन में 'काम' करते हैं।"[1] अर्थात गुलशन अरोरा बुजुर्ग होने पर भी 'काम' (sex) को महत्व देती है। इस काम (sex) वासना की जागृति मीडिया विज्ञापनों की परिणती ही है। गुलशन अरोडा इस तरह जीना चाहता है। मृत्यु से वह डरता है, वह कहता है - "....ज्योतिषी ने मेरे को बताया है कि मैं अभी पैंतीस साल तक नहीं मरनेवाला। एक सौ पाँच साल की उभर में सबेरे वाली गाडी में बैठकर ठस्से से अपन ऊपर जाएँगे....।"[2] उदय जी ने यहाँ विज्ञापन की दुनिया से प्रभावित वृद्ध लोगों की मानसिकता को किसी आवरण के बिना साफ-साफ दिखाया है।

2.4 विस्थापन का यथार्थ

विस्थापन आज का दुःख है। विस्थापन मनुष्य के जन्म स्थान एवं निवास स्थान को छोडने की प्रवृत्ति है। विस्थापित लोग एक नये स्थान की ओर जाते हैं। अग्निशेखर ने कहा है - "विस्थापन एक भू-भाग का छूटना नहीं या एक भूगोल से निकलकर दूसरे भूगोल में चला जाता मात्र नहीं है, बल्कि अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपनी प्रकृति से भी बाहर होना है जिसकी क्षतिपूर्ति भी

---

1. उदय प्रकाश - मैगेसिल - पृ. 109
2. वही - पृ. 109

संभव नहीं।"[1] विस्थापन में असुरक्षा का भाव भी मौजूद है, विस्थापन इच्छा से, बलपूर्वक या मजबूरन से होता है। डॉ. एन. मोहनन के मुताबिक "…. लोग नये देशों की खोज, एक देश से दूसरे देश की ओर गमन, आर्थिक विकास के लिए किये गये प्रवजन और राजनैति संघर्षों से हुए पलायन आदि विस्थापन की रफ्तार तेज हो चुकी थी।"[2] भारतीय संदर्भ में विस्थापन के मुख्य कारण भारत विभाजन, विकास योजनाएं और राजनीतिक कारण हैं। भौगोलिक विस्थापन को प्रोत्साहित करने में भूमंडलीकरण की भूमिका महत्वपूर्ण है। लोग आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हमारे इलाकों में अपना व्यापार शुरू किया। व्यापार के विकास के लिए स्थानीय लोगों को जबरदस्ती से हटा कर देता है। आज इन लोगों के पुनःनिवास के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। उदय जी ने अपनी रचनाओं में विस्थापन के मुख्य कारणों की चर्चा की है।

2.4.1 विकास योजना

विकास समाज में अनिवार्य है। आज विकास लोगों को अपनी धरती से उघाडते हैं। दिल्ली जैसे महानगरों से गरीब लोग निरंतर विस्थापित हो रहे हैं। उनके लिए कोई चारा तो नहीं या कोई व्यवस्था भी नहीं। बडे बडे शोपिंगमाल के निर्माण के लिए विकास का नारा बुलंद कर गरीबों को फेंका जाता है। उदय प्रकाश ने दिल्ली में विस्थापित होकर मक्खियों एवं कीडों की तरह इधर-उधर भडक ने

---

1. अनुशीलन - 2001 - पृ. 327
2. डॉ. एन. मोहनन - समकालीन हिन्दी उपन्यास - पृ. 68

वाले गरीब लोगों को देखा हैं। उनके प्रति संवेदनशील होकर उन्होंने 'सफल चुप्पी' नामक कविता लिखी इस कविता में उदय जी यह साफ-साफ दिखाना चाहते हैं कि विस्थापित लोगों के टपरे जहाँ-जहाँ उग जाते हैं वहाँ की ओर पुलीस बन्दुक लेकर एवं बुल्डोजरों के ज़रिये उसके टपरे का विनाश करते हैं। उनके निशान मिट जाते हैं। उदय प्रकाश इसका खुलासा यों करते हैं-

"बहुत खदेडा जाता है उन्हें दिल्ली से बाहर
लेकिन वे कीडों और मक्खियों की तरह हर जगह आ जाता
उनके टपरे सुबह-सुबह उग जाते थे जहाँ-वहाँ
कल तक नहीं था उनका निशान।"[1]

अनेक मल्टी नासनल कंपनियों ने दूसरे देशों और वहाँ के ग्रामीण इलाकों तक अपना व्यापार शुरू किया। ये व्यापार केवल चीज़ों की बिक्री मात्र नहीं बल्कि वाटर थीम पार्क और होलीडे पाकेज जैसा व्यापार भी इसमें शामिल है। वाटर थीम पार्क और बाँध यदि आ जाये तो विकास के नाम पर लोग जबरदस्ती से विस्थापित होते हैं। लेकिन हमें यह भी देखना चाहिए कि इस वाटर थीम पार्क में अमीर लोग आते हैं। उनके बच्चे आते हैं। साधारण लोग विशेषकर विस्थापित लोग दूरी पर है। उदय प्रकाश ने अपनी चर्चित कहानी मैंगोसिल में बताते हैं - "...इस इलाके के बहुत से लोगों को हटाकर भिलसवा भेज गया है। सुनते हैं यहाँ कोई वाटर पार्क बनेगा, जिसमें दिल्ली के अमीर लोग छुट्टियों में नहाते, तैरते, खाने और खेलकूद,

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - सफल चुप्पी - पृ. 45

मौजमस्ती करने आयेगा।"[1] अर्थात् विस्थापितों की पीडा में अमीर लोग मौजमस्ती करते हैं। विस्थापित होकर लोग कहाँ-कहाँ रहते हैं? उस पर चिंता नहीं होते। लेकिन सामाजिक प्रतिबद्धता से युक्त संवेदनशील रचनाकार इस पर सोचकर लिखते हैं। 'मैंगोसिल' कहानी में गायब होनेवाले लोगों की चिंता हम देख सकते हैं - "जहाँगीर पुरी की गली नबर सात उसमें गली में बने हुए मकान और उनमें रहनेवाले लोग कहाँ गायब हुए और निम्न आर्यवर्ग के परिवारों को वहाँ से विस्थापित कर दिया गया था। पुलीस मुंसिपालिटी, अटसूगैस, बुल्डोनर्स, प्रशासक, राजनीति... सब बडी इमारतें और बाज़ारों को बनाने के पक्ष में थे।"[2] अर्थात न्याय व्यवस्था भी विकास के पक्ष में खडे होकर विस्थापितों को अनदेखा करते हैं। इसप्रकार जबरदस्ती से विस्थापित होनेवाले लोग अनुपस्थित होते हैं। अनुपस्थित लोग के प्रति उदय जी चिंतित हैं और संवेदन शील होकर कहते हैं - "यह एक ऐसा जीवन है जिसमें कभी भी हर रोज दिखाई देनेवाला आदमी एक दिन अचानक अनुपस्थित हो जाता है। फिर वह कभी नहीं दिखता। बाद में उनकी स्मृति भी बाकी नहीं बचती। अगर आप उसे खोजना भी चाहें तो उस जमीन पर जहाँ कभी उसका अस्तित्व हुआ करता था, वहाँ पर थोडा सा गीलापन, जरा सी नमी भर आपको मुश्किल से मिलेगी।"[3] इसका तथ्य यह है कि किस जगह पर कभी न कभी एक मनुष्य का जीवन शुरू हुआ, जो अब नहीं रहा, जो अब कभी नहीं होगा। यह है विस्थापितों का यथार्थ।

---

1. उदय प्रकाश - मैंगोसिल - पृ. 130
2. वही - पृ. 149

विस्थापित लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए घूम रहे हैं। इस तरह घूमनेवाले लोग हमारे बीच में हैं। वे रो-रो कर चल रहे हैं। आँखों से खून बह रहा है। अर्थ प्रधान युग में उदय जी 'ढेला' नामक कविता के ज़रिये घूमनेवालों की स्थिति हमारे सामने पेश करते हैं-

"वह था क्या एक ढेला था
कहीं दूर गाँव-देहात से फिका चला आया था
दिल्ली की ओर
रोता था कडकड डूमा, मंगोलपुरी, पटपडगंज में
खून के आँसू चुप चाप।
x x x
आदमी लोगों, सुनो
इस ढेले के भी है कुछ विचार
ढेले को भी करनी है बाज़ार में खरीददारी
ढेइस कठिन समय में ढेले का सोचना है
उसको भी निभानी है कोई भूमिका
कोई अखबार छपेगा
लोकतंत्र और मनुष्यता के संकट पर
ढेले के विचार।"[1]

ढेले से भी ज़्यादा शोचनीय अवस्था को भोगनेवाले विस्थापितों का चित्रण खींचकर मानवीयता को स्थापित करने का आह्वान देते हैं रचनाकार।

---

1. उदय प्रकाश - रात में हार्मोनियम - ढेला - पृ. 19-20

2.4.2 मानसिक विस्थापन

विस्थापन का और एक रूप है मानसिक विस्थापन। आज की संस्कृति में जीनेवाले व्यक्ति मानसिक तौर पर विस्थापित हो रहे हैं। ये विस्थापन भी खतरनाक परिणित का हिस्सा है। क्योंकि इस से व्यक्ति वर्तमान परिस्थितियों से बचाना चाहता है। वह कहीं भी फिट न होता। उदय प्रकाश की कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में मानसिक विस्थापन से त्रस्त पॉल गोमरा की कथा है। कहानी का नायक है रामगोपाल सक्सेना। रामगोपाल ने विखंडनवादी पाउपद्धति को अपनाते हुए सिर्फ यह किया कि अपने नाम रामगोपाल के 'पाल' को तोडकर अलग निकाला और उसे हल्का सा डिस्टटि करते हुए पाल बना दिया। इसके बाद बाकी बचे 'रामगो' को उल्टी तरफ से पढ दिया - गोमरा। उनका नया नाम था पॉलगोमरा। पालगोमरा अपनी पत्नी से कहता है - "यह आज इसी पल से मेरा नया नाम है। द ग्रेट लिजेंडरी हिन्दी पोएट - पॉलगोमरा।"[1] वह हिन्दी का कवि है लेकिन नाम से ऐसा लगता है कि लातीनी व अमेरिकी है। निसंदेह यह नाम अपाची इंडियन लूई बैक्स, रेमो फर्नाडीस सैम पित्रोदा या टी. के बैजी जैसे नाम से बराबरी का टक्कर लेता था। पॉलगोमरा मानसिक रूप से पाश्चात्य बनने की चेष्टा करनेवाले आज का प्रतिनिधि है। पॉलगोमरा सच्चे नागरिक या एक अदद आदमी न बन जाती। वह पागल बन जाता है। कोई भी उनको मानने के लिए तैयार नहीं होता। कवि सम्मेलनों से भी तिरस्कृत है। पागल होनेवाला पॉलगोमरा बार-बार कहता है - "मैं

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 135

हूँ दलित हिन्दी कवि रामगोपाल। मैं दिल्ली का नहीं, रामपुर और गाजियाबाद का है। मैं स्वदेशी आंदोलन चलाऊँगा।"[1] पहले तो मानसिक विस्थापन का शिकार होनेवाला पॉलगोमरा उसका असली चेहरे को जानकर वापस लेने का प्रयत्न करता है। याने कि वास्तविकता को समझकर, अपनी अस्मिता को समझकर स्वदेशी बनना चाहता है। इसलिए वह पाश्चात्यों के विरुद्ध पूरी ताकत से अंग्रेजी में नारा लगाता है - "क्विट इंडिया, क्विट इंडिया, क्विट इंडिया....।"[2] लेकिन आज की नियति उसे मानने के लिए तैयार नहीं। पॉल गोमरा कहता है-

"जो प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं
यथार्थ मिटा रहा है जिनका अस्तित्व
हो सके तो हम उनकी हत्या में न हो
शामिल
और संभव हो तो संभालकर रख लें
उनके चित्र
ये चित्र अतीत के स्मृति चिह्न है।"[3]

1980 में भरत भूषण अग्रवाल पुरस्कार मिली 'तिब्बत' कविता का केन्द्रीय भाव मानसिक विस्थापन की पीडा है। इस कविता में तिब्बती लामाओं की पीडा है। उदय जी बचपन से ही लामाओं को जानते थे। उनके प्रति गहरा लगाव था। अरुण आदित्य के साथ होनेवाले साक्षात्कार में उदय जी कहते हैं - "....वहाँ

---

1. उदय प्रकाश - अरेबा-परेबा - पॉल गोमरा का स्कूटर - पृ. 169
2. उदय प्रकाश - पॉल गोमरा का स्कूटर - अबूतर-कबूतर - पृ. 169
3. वही - पृ. 169

से ट्रेन बदली जाती थी। सरगुजा के लिए जो तिब्बती शरणार्थी आते थे, उनका एक हिस्सा अनपुर में उतर जाता था। वहाँ से दूसरी ट्रेन लेता था। बरसात के दिनों में दूसरी ट्रेन कई-कई दिनों तक रद्द हो जाती थी, वे कहीं रुक रहते थे।"[1] यह दृश्य उनके भीतर अटक नया कई सालों के बाद यह दृश्य 'तिब्बत' नामक कविता बन गया। यह कविता चर्चा में ज़्यादा आयी। उदय प्रकाश इस कविता में एक बच्चे की ओर से अपने पिता से सवाल करता है-

"पापा, लामाओं को
कंबल ओठकर
अंधेरे में
तेज तेज चलते हुए देखा है कभी
जब लोग मर जाते हैं
तब उनकी कब्रों के चारों ओर
सिर झुका कर
खडे हो जाते हैं लामा
वे मंत्र नहीं पढते
वे फुसफुसाते है - तिब्बत, तिब्बत, तिब्बत
तिब्बत-तिब्बत-तिब्बत
और रोते हैं।"[2]

लामा लोग अपने राज्य से अलग होना न चाहते हैं। इसलिए अगर कोई लामा मरे तो उनके कब्रिस्तान के चारों ओर खडे होकर कोई मंत्र न बुदबुदांत है,

---

1. उदय प्रकाश और अरुण आदित्य के बातचीत - शीतलवाणी - पृ. 67
2. उदय प्रकाश - सुनोकारीगर - तिब्बत - पृ. 89

उनका मंत्र है - तिब्बत, तिब्बत, तिब्बत। किसी भी कारणों से विस्थापित लोगों के मन में भी अपनी मिट्टी की महक होती है। विस्थापित लोग आत्मसंघर्ष में पड जाते हैं। क्योंकि उनकी अपने लिए योग्य स्थान, योग्य काम, अपनी नई संस्कृति, अपने बच्चों के भविष्य और अन्य प्राथमिक वस्तुओं की तलाश करनी पडती है। सरकार एवं न्याय उनके साथ है तो उनके संघर्ष कम हो जायेंगे।

2.5 निष्कर्ष

समकालीन रचनाकार उदय प्रकाश समय परिवर्तन के साथ अपनी रचनाओं के परिदृश्य में भी बदलाव लाये हैं। पूँजीवाद के विकास के साथ उसकी संस्कृति विकसित हो रही है। आज की दुनिया उद्योगपतियों, ब्यूरोक्राटों व करोडपतियों की है और नई-नई विकास योजनाएँ उनके लिए सुरक्षित हैं क्योंकि उनको पैसा एवं पवर है। उसके लिए साधारण जनता हकदार नहीं। उनके परिवार बिगड गये, रिश्ते-नाते टूटे गये, उनकी भाषा-संस्कृति सब गायब हो गयी, और वे विस्थापित हो गये हैं। याने कि सब कहीं उसकी असुरक्षा का भय व्याप्त गया है। हमें यह देकना चाहिए कि ग्लोबल विलेज की परिकल्पना में विकास की लहर में आम आदमी हतप्रभ हो गया। उसके आगे और कई चारों नहीं। लेकिन वैश्वीकरण, बाजारवाद और उदारीकरण आदि के ढाँचे में बनी युवापीढी अपने लिए सुविधापूर्ण ज़िंदगी बिताने के लिए दौड रही है। वे सौन्दर्य प्रतियोगिता में भाग लेकर, विज्ञापन की चौकाचौध में ब्रांड को पहनकर, बाजार के जोकर बनकर पाश्चात्य सभ्यता की कठपुतलियों बन रहे हैं। इस तरह आधुनिक बनने के लिए अपने साध्य तक पहुँचने

के लिए कुछ भी करने के लिए वे तैयार हैं। उदय प्रकाश इससे स्वयं को दूर नहीं रख पाये। उदय प्रकाश ने स्थानीयता को पकड कर इसका प्रखर प्रतिरोध अपनी रचनाओं के द्वारा किया है। इसमें वे सफल सिद्ध हुए हैं। रेखा सेठी का वक्तव्य इसको और भी श्रेष्ठ या समीचीन बनाता है - "मुक्तिबोध की तरह उदय प्रकाश भी अपने समय के विसंगत यथार्थ को प्रस्तुत करने के लिए 'टाइम' और 'स्पेस' की बाह्य अतिक्रमण करते हैं।"[1] टाइम और स्पेस की सीमाओं को लांघकर उनकी रचनाओं में समय की सच्चाइयाँ हम देख सकते हैं।

❖❖❖

1. ज्योतिष जोशी - सृजनात्मकता के आयाम उदय प्रकाश पर एकाग्र - पृ. 71